चकमक

नवम्बर 1994

बाल विज्ञान पत्रिका

रु. 5.00

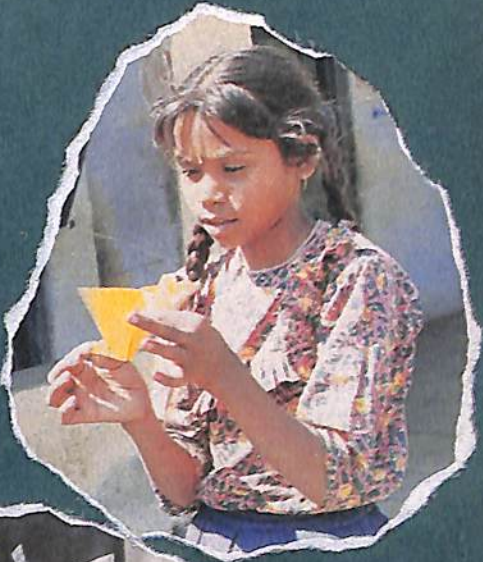

शिखा कहार, पाँचवीं, सुखतवा, होशंगाबाद, म.प्र.

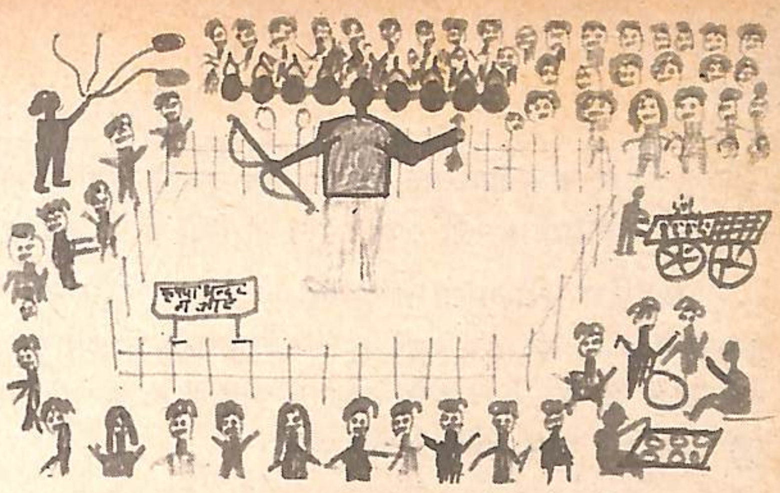

प्रकाश दुबे, बालोदा, बिलासपुर, म.प्र.

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-10 अंक-5 नवम्बर, 1994

संपादक

विनोद रायना

सह-संपादक

राजेश उत्साही

कविता सुरेश

संपादन सहयोग

टुलटुल विश्वास

कला-सज्जा

जया विवेक

उत्पादन/वितरण

कमलसिंह, मनोज निगम

चकमक का चंदा

एक प्रति : पांच रुपए

छमाही : पच्चीस रुपए

वार्षिक : पचास रुपए

डाक ख़र्च मुफ्त

चंदा, मनीआर्डर या बैंक ड्राफ़्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।

कृपया चेक न भेजें।

कागज़ : यूनिसेफ के सौजन्य से।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य,

ई-1/208,

अरेरा कॉलोनी,

भोपाल-462016

(म. प्र.)

फ़ोन : 563380

111 वें अंक में

विशेष

8 ❑ बाल-मेला

17 ❑ बालमेला गतिविधि-1 : माथापच्ची

19 ❑ बालमेला गतिविधि-2 : अभिव्यक्ति

24 ❑ बालमेला गतिविधि-3 : तुम भी बनाओ

26 ❑ बालमेला गतिविधि-4 : विज्ञान, करके देखो

30 ❑ बालमेला गतिविधि-5 : ओरीगैमी

36 ❑ बालमेला गतिविधि-6 : कुछ पास की, कुछ दूर की

कविताएँ

22 ❑ बाल-मेला

29 ❑ दीप जले

नाटक

13 ❑ कथा रावण की

धारावाहिक

41 ❑ मनुष्य महाबली कैसे बना?-15

हर बार की तरह

2 ❑ मेरा पन्ना

34 ❑ माथापच्ची

40 ❑ हमारे वृक्ष - 31 : गूलर

और यह भी

33 ❑ चित्रकथा : बिन्दु

❑ आवरण के छायाचित्रों के छायाकार : के. आर. शर्मा

❑ बाल-मेला लेख के सन्दर्भ में प्रकाशित अन्य छायाचित्र देवास तथा दिल्ली मे आयोजित बालमेलों के है।

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

मेरा पन्ना

इमली

मैं जब आठ वर्ष की थी तब दूसरी कक्षा में थी। तब मेरे आँगन में इमली का पेड़ था। मेरी सहेलियाँ इमली खाने आतीं तो मेरी मम्मी उनको भगा देती थी।

एक दिन मेरी मम्मी मेरे मामा के घर गई थी। मैंने मेरी सहेलियों को बुला लिया और मैं इमली पे चढ़ गई। मुझे एक बहुत बड़ी इमली दिखी। मैं उसे तोड़ने लगी तो मेरा पैर फिसल गया और मैं गिर गई। मेरी सहेलियाँ मुझे अस्पताल ले गईं। फिर मेरी मम्मी आ गई। पापा ने मुझे समझाया और मम्मी ने मुझे डाँटा।

❑ ललिता और अनिता, पाँचवीं, देवगढ़, देवास, म.प्र

संगीता मिश्रा, आठवीं, धार, म.प्र.

मेरा पन्ना

सज़ा और मज़ा

जैसे ही पीरियड की घण्टी लगी। सर क्लास में आए और पढ़ाना शुरू कर दिया। मैं और मेरा दोस्त दूसरे नम्बर की डेस्क पर बैठते हैं। और आगे की डेस्क पर भी दो लड़के बैठते हैं। वे इतने उधमी, चालाक और तेज़ हैं कि उनके आगे तो हरी मिर्च भी फीकी पड़ जाए। वैसे हम भी कुछ कम नहीं। यह पीरियड लास्ट का पीरियड रहता है। अतः लास्ट के पीरियड में किसी का भी पढ़ने में मन नहीं लगता। सभी को घर भागने की पड़ी रहती है।

जब सर ब्लेक बोर्ड पर संस्कृत लिखा रहे थे। उस समय हमारे आगे की डेस्क पर बैठे दोनों लड़के आपस में झगड़ रहे थे। दोनों एक-दूसरे के बैग इधर-उधर सरका रहे थे। एक लड़के ने खड़े होकर सर से कह दिया। सर ने दोनों लड़कों को समझाया कि बच्चो इतनी छोटी-छोटी बातों पर शिकायत नहीं करते और इतना कहकर सर फिर से लिखाने लगे। तब मैंने धीरे से उनसे कहा, ''इतनी छोटी-छोटी-सी बातों पर शिकायत करते हो, तुम्हें तो चुल्लू भर पानी में डूब मरना चाहिए, जो तुम्हें झगड़ना भी नहीं आता है। सर से कोई बड़ी-सी शिकायत करो, तुम लोग अपने आप को तीस-मार खाँ समझते हो न!"

मेरा बस इतना कहना था कि आगे बैठे लड़के को सहन नहीं हुआ और उसने अपना बैग ज़ोर से पटककर सर से कहा, "सर इसने मेरा बैग पटक दिया।"

सर ने पूरे पीरियड दूसरे लड़के को घुटने टेके रहने को कहा। करे कोई और भरे कोई। बेचारे को बिना कसूर सज़ा मिली। इसके बाद सर फिर से लिखाने लगे। अब उस दूसरे लड़के ने जिसे बिना कसूर सज़ा मिली, बदला लेने की सोची, और उसने उठ कर उस पहले लड़के को ज़ोर से चाँटा लगाया और फिर घुटने टेक कर खड़ा हो गया। चाँटे से पूरी क्लास में सन्नाटा छा गया और सभी लड़के चौंक गए कि, 'यह क्या हुआ।' सर ने भी अचानक चौंक कर कहा, "यह क्या हुआ, यह आवाज़ कहाँ से आई?"

तो दूसरे लड़के ने जिसे सज़ा मिली थी कहा, "यह (जिसने सज़ा दिलाई थी) फुग्गे फोड़ रहा है।"

तभी पूरी क्लास के लड़के हा-हा-ही-ही करके हँसने लगे। और तभी छुट्टी की घण्टी बज गई। रास्ते भर हम क्लास में हुई घटना पर इतना हँसे कि हँस-हँस कर पेट दुखने लगा।

❑ हरिनारायण साहू, आठवीं, पिपरिया, होशंगाबाद, म.प्र

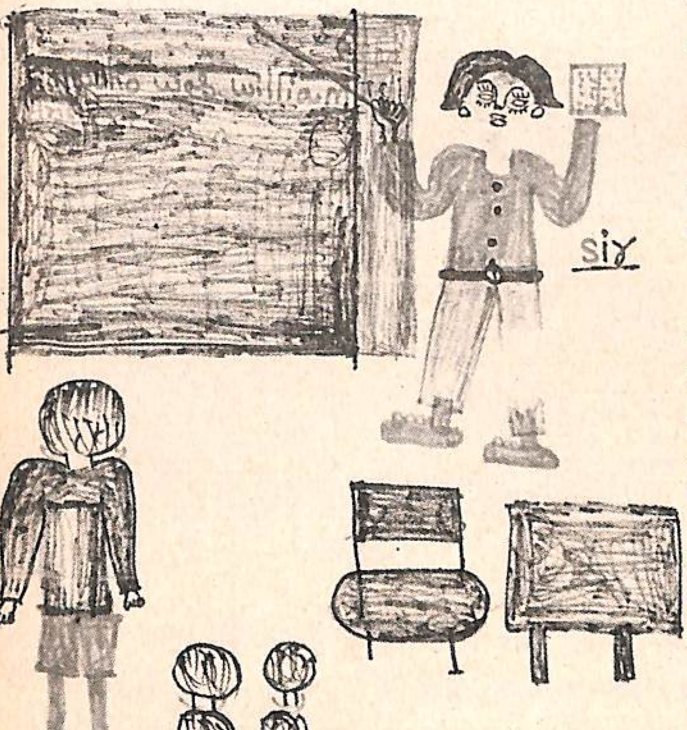

सत्यनारायण सिंह चौहान, नवमी, हिवाला, खिड़किया, होशंगाबाद, म.प्र.

फुटबाल

निर्मल गोयल, सोलह वर्ष, पटना, बिहार

हम फुटबाल खेल रहे थे। फुटबाल का मैदान ठीक नहीं था। उसमें पत्थर बहुत थे। एक लड़का मेरा दोस्त किक लगाने गया तो उसका पैर खिसल गया और उसे बहुत चोट लगी। हम दौड़ते-दौड़ते सर के पास गए। सर ने कहा इसे जल्दी-से अस्पताल ले चलो। अस्पताल वहाँ से चार किलोमीटर दूर था। मैं उसे साइकिल पर बैठाकर अस्पताल ले जा रहा था तो रास्ते में साइकिल पंचर हो गई। मैंने सोचा-'अब क्या होगा? कैसे ले जाऊँगा मेरे दोस्त को।'

तभी उधर से एक कार आई। मैंने कार को रुकवाया और दोस्त को कार में बिठाया। और हम अस्पताल पहुँच गए। फिर वह ठीक हो गया। तब हमने सोचा फुटबाल खेलने के लिए मैदान ठीक होना चाहिए। फिर दूसरे रोज़ हमने मैदान ठीक किया और हम अब खूब फुटबाल खेलते हैं।

❑ गोविन्द कुमार गौर, सातवीं,
चौकड़ी, होशंगाबाद, म.प्र.

पहेलियाँ

जंगल की बन्दरी घर में छिपाए कान
घी, शक्कर खाने वाली घूड़ा पे मकान

❑ ब्रजेश कुमार यादव, बानापुरा, सिवनी मालवा, म.प्र.

दाढ़ी वाला छोकरा बिके बाज़ार-बाजार
नाम सुनोगे तो टपक जाएगी लार

❑ मनोज पाराशर, जनूरा, सवाई माधोपुर, राज.

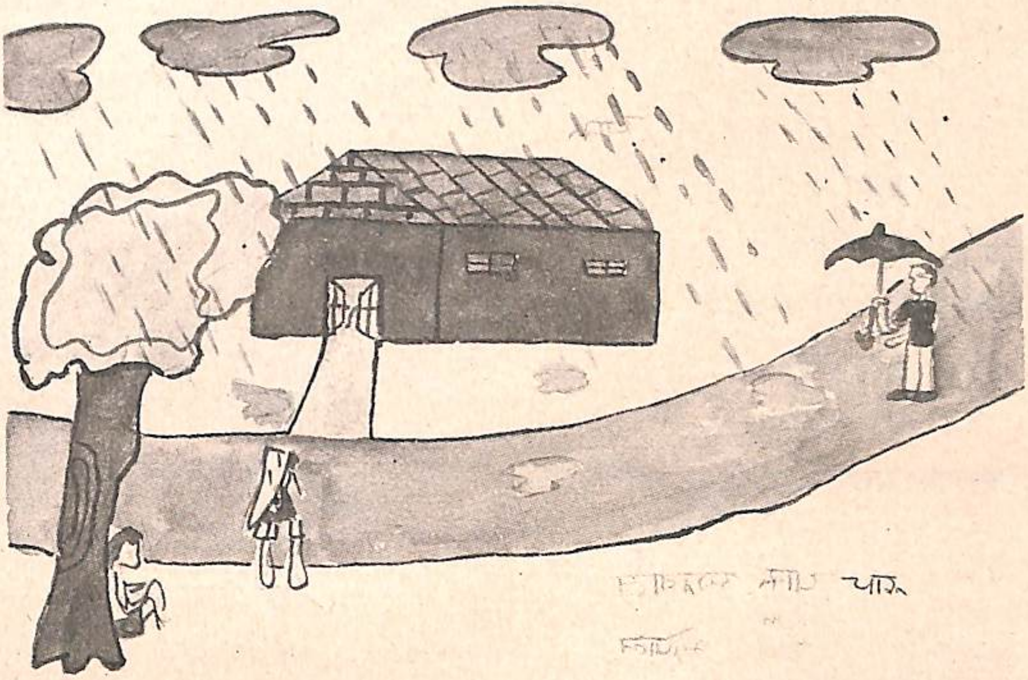

चारू अग्रवाल, भोपाल, म.प्र.

पगलु की कहानी

मैं एक छोटे से गाँव में रहता हूँ। उस गाँव का नाम मड़देवरा है। उस गाँव में एक पगलु रहती थी। वह कहीं से आई थी। वह गाँव के लोगों से रोटी माँगकर खाती थी। गाँव के लोग उसे रोटी दे देते थे। उस गाँव के बच्चे उसे परेशान किया करते थे। उसे धीरे-धीरे पैरों में सूजन आ गई। वह चल नहीं सकती थी।

एक दिन उसे बहुत ठण्डी लग रही थी। लेकिन उस पगलु की कौन सुनने वाला, न कोई रोटी देता था। वह एक जगह बैठी रोटी का इंतज़ार कर रही थी। तो मैंने अपनी माँ से कहा, "उस पगलु को ज़ोर से भूख लगी है। और ठण्डी भी लग रही है।"

तो माँ ने कहा, "जा बेटा ये चार पूड़ी उसको दे आ।"

मैंने उसको पूड़ी दे दी। वहाँ से एक सज्जन से माचिस माँगकर आग जला दी। मैं आग जलाकर धीरे-धीरे चलने लगा तो वह बोली, "ऐ-ऐ।" मैं उसके पास गया तो उसने मेरे पैर छुए। मैं अपने घर आ गया। रात को उसकी मृत्यु हो गई। सुबह गाँव वालों ने उसका अंतिम संस्कार कर दिया।

❑ काशीराम चढ़ार, नौवीं, मड़देवरा, छतरपुर, म.प्र.

दो कविताएँ

दादा भाई
दादा भाई
थोड़ा गुस्सा सहा करो
दादा भाई
दादा भाई
प्रेम भाव से रहा करो
दादा भाई
दादा भाई
अच्छी बातें सुना करो
दादा भाई
दादा भाई
चलकर देखो अच्छी राह
दादा भाई
दादा भाई
बहुत मिलेगी वाहे-वाह'

❑ शिल्पा सहाय, आठवीं, तुरेंगा, महासमुन्द, म.प्र.

एक सुहानी सुबह थी
पेड़ों पर चिड़िया चहकी थी।
घर से निकले पंख पसार
पूरब से पश्चिम को जाए।
घूम-घाम जब घर को आए
मम्मी को एक बात बताए।
देख लिया हमने जग सारा
अपना घर है सबसे प्यारा।

❑ कंचन सहारे, परास्थिया, छिन्दवाड़ा, म.प्र.

रूपाली गंगराडे, सातवीं, हरसूद, म.प्र.

श्वेता विभाकर, सातवीं, मणिपुर

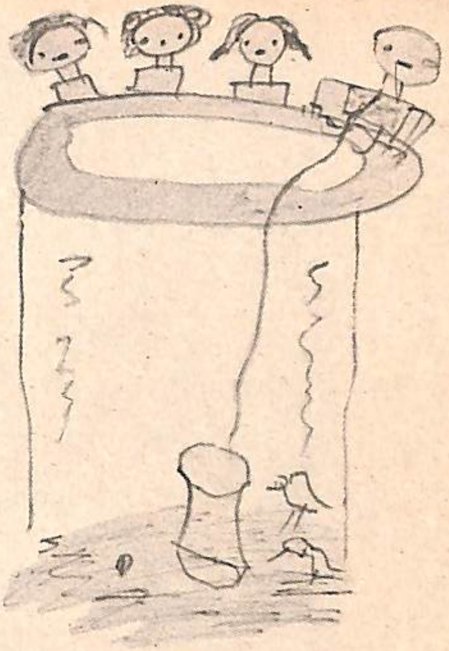

रामनिवास, छठवीं, देवास, म.प्र.

संतोष पाटीदार, पाँचवीं, देहरिया साहू, देवास, म.प्र.

अनीता जैन, मड़देवरा, छतरपुर, म.प्र.

सरोज सेन, सातवीं, उज्जैन, म.प्र.

राकेश अग्रवाल

बाल-मेला

❑ शशि सबलोक

'बाल-मेला' यानी बहुत सारे बच्चों का जमघट, खूब चहल-पहल और ढेर सारे मजेदार खेल, यही न। तुम्हारे स्कूल में भी बाल-मेले होते रहते हैं। उन मेलों में क्या होता है? तुमने भी कभी किसी मेले में हिस्सा लिया ही होगा। आमतौर पर इन मेलों में मैदान में एक मंच बना होता है जिस पर बच्चे कहानी, कविता, गीत, चुटकुले या एकल अभिनय करके दिखाते हैं। और स्कूल के कमरों में या थोड़ी दूरी पर अलग-अलग पंडालों में विषय के हिसाब से कुछ मॉडल या पोस्टर लगे होते हैं। कुछ बच्चे चाट या खाने-पीने की चीजों की दुकान लगाए होते हैं। कहीं-कहीं कुछ बच्चे अपने बनाए मॉडल को चलाकर बता रहे होते हैं। कुल मिलाकर मेले में यही सब होता है। ऐसे बाल-मेलों में आमतौर पर बच्चे भाग तो लेते हैं पर कुछ ही बच्चे सक्रिय होते हैं। बाक़ी केवल सब दर्शक होते हैं। हो सकता है सभी को सक्रिय रूप से भाग लेने की इच्छा न हो पर दर्शकों में से कई ऐसे हो सकते हैं जो ख़ुद कुछ करने की इच्छा रखते हों।

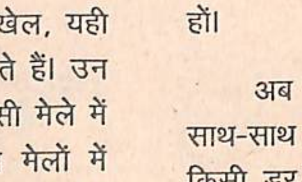

अब अगर मान लो इन सब चीजों के साथ-साथ मेले में सब बच्चों को मौक़ा मिले। बिना किसी डर के हर बच्चा मेले में आजादी से अपने मन की कर सके और ख़ुद भी शामिल हो सके। तो कैसा रहे! ऐसे मेले के बारे में तुम क्या सोचते हो!

इस तरह के मेले सिर्फ़ स्कूल में ही नहीं तुम अपने गली-मोहल्ले में भी कर सकते हो। इनका अपना ही मजा है। वैसे बाल-मेले बहुत अलग-अलग तरह के हो सकते हैं, होते भी हैं। शहर में होने वाले बाल-मेले, गाँव में होने वाले बाल-मेलों से कई मायनों में अलग होते हैं। इसी तरह स्कूल में होने वाले मेले और तुम्हारे ख़ुद के द्वारा आयोजित तुम्हारे मोहल्ले के मेले में फ़र्क तो होगा ही। हाँ सामान्य मेलों में और इन बाल-मेलों में जो अन्तर होता है, वो यह कि इन

बाल–मेलों में सिर्फ़ बच्चे ही भाग लेते हैं और गतिविधियाँ कुछ अलग तरह की होती हैं।

ज्यादातर गतिविधियाँ ऐसी जो कि तुम रोज़ ही करते हो। चित्र बनाते हो या कहानी या कविता लिखते हो। या फिर जोड़-जुगाड़ करके कुछ नया बना लेते हो, मिट्टी के खिलौने बनाते हो या खेल खेलते हो - कबड्डी, खो खो और कुछ नए खेल भी। खेलों से एक बात और याद आई। अक्सर बच्चों की बात करते समय यह जोड़ दिया जाता है कि बच्चे इससे क्या सीखेंगे। हर काम जो बच्चे करें उससे उन्होंने क्या सीखा, क्या नहीं सीखा इसकी खोजबीन करना जरूरी तो नहीं। फिर कोई भी, कभी भी, कहीं भी, कुछ भी करते हुए कुछ न कुछ देख रहा होता है, समझ रहा होता है और हो सकता है सीख भी रहा हो। और फिर मेला तो मेला है। कुल मिलाकर ऐसी गतिविधियाँ हों जिनमें बच्चों को मजा आए। जो कुछ वे जानते हों, कर सकते हों, कर पाएँ। हर बच्चा अपने मन से जो कुछ करना चाहे कर सके और उससे उसे उत्साह मिले। बेवज़ह उस पर सीखने का दबाव न हो।

इस तरह के मेले कैसे करें इसके लिए तुम्हें ले चलते हैं सेमरीखुर्द, जहाँ दो दिन का बाल-मेला होने वाला है। तैयारियाँ चल रही हैं। सेमरीखुर्द के आठवीं कक्षा के दो छात्र नीता और राजेन्द्र पास के एक गाँव में चल रहे चकमक क्लब के एक बाल-मेले में भाग लेने गए थे। उस मेले में भाग लेकर जब ये दोनों वापस लौटे तब से वे उस तरह का मेला अपने गाँव में करने को उतावले थे। सो उन्होंने इस बाबत खोजबीन की। चकमक क्लब के मेले वाले भैया, दीदी को अपने यहाँ आने का न्योता भी दे डाला। बस फिर क्या था, मेले के दिन भी तय हो गए - शनिवार और इतवार। मेले के लिए ज़रूरी सामान की सूची तैयार हो गई। यह सारा सामान नीता और राजेन्द्र को सेमरीखुर्द से ही जुगाड़ना था।

दोनों ने मिलकर अपने दोस्तों और शिक्षकों से भी बातचीत की। प्रधान अध्यापक ने थोड़े ना-नुकर के बाद स्कूल में मेला करने की इजाज़त दे दी। शनिवार तो बाल-सभा का दिन था ही सो आधे दिन की पढ़ाई से फुरसत रहती है। नीता, राजेन्द्र और उनके दोस्त उत्साह से बाल मेले के लिए पोस्टर बनाने और सामान जुगाड़ने में लग गए।

मेले का दिन क़रीब आ पहुँचा। शफ़ीक, रमेश, रवि, शोभा, हमीदा और सुमन अपना-अपना सामान लिए मेले से एक दिन पहले सेमरीखुर्द पहुँच गए। स्कूल के ही एक कमरे में चकमक क्लब वाले अपने साथ लाए सामान और सेमरीखुर्द वाले अपने जुगाड़े सामान के साथ इकट्ठे हुए। मेले की तैयारियाँ शुरू हुईं। शोभा और रमेश ने स्कूल के हर कमरे के दरवाजों पर कागज की एक-एक पट्टी चिपका दीं। पट्टियों पर लिखा था - **अभिव्यक्ति यानी अपने मन की बात कहना, कागज़ का खेल : ओरीगैमी, तुम भी बनाओ, विज्ञान : करके देखो, माथापच्ची, कुछ पास की, कुछ दूर की।**

हमीदा और रवि ने दरवाजों पर चिपकी पट्टियों के हिसाब से कमरे में सामान रखना शुरू कर दिया। बाक़ी लोग पोस्टर वगैरह लगाना करते रहे। मेले के पहले की तैयारियाँ हो गईं।

अगले दिन मेले की देख–रेख करने वाले सभी भैया–दीदी सुबह आठ बजे ही पहुँच गए। एक घण्टे बाद मेला शुरू होना था। शफीक और रवि ने आने वाले सभी बच्चों को मैदान में ही बैठाना शुरू कर दिया। नौ बजे तक काफ़ी बच्चे इकट्ठे हो चुके थे। पहले सभी ने गीत गाया। गीत की एक लाइन शोभा और हमीदा गाती थीं, सारे बच्चे उसे दोहराते थे। फिर अगली लाइन वो दोनों गातीं और फिर सारे बच्चे

दोहराते। सारे माहौल में बाल-मेले का गीत गूँज उठा।

गीत के बाद रवि ने बच्चों को बाल-मेले की रूपरेखा बताई कि आज का मेला किस तरह होगा। इस मेले में छठवीं, सातवीं और आठवीं कक्षा में पढ़ने वाले बच्चे ही भाग लेने आए थे, क्योंकि यह माध्यमिक स्कूल था। रवि ने बताया कि बाल-मेले में होने वाली गतिविधियों में सभी की भागीदारी हो, इसलिए सारे बच्चों को छः टोलियों में बाँटा जाएगा। सभी टोलियों को सभी गतिविधियाँ करने, देखने का मौका मिले इसलिए टोलियाँ एक-एक घण्टे में कमरा बदलेंगी। बीच में आधा घण्टा खाना खाने की छुट्टी भी होगी। कल मेला आठ बजे ही शुरू हो जाएगा और फिर अन्त में सब एक साथ बैठकर प्रश्न मंच वाला खेल खेलेंगे।

टोलियाँ बनाने के लिए बच्चों से कहा गया कि एक सिरे से एक बच्चा गिनती बोलना शुरू करेगा। छः तक की गिनती के बाद सातवाँ बच्चा फिर एक से शुरू करेगा। एक बच्चा बोला एक, दूसरा दो, तीसरा तीन, चौथा चार और पाँचवा पाँच, छठवाँ छः, फिर सातवाँ एक, आठवाँ दो, नौवाँ तीन...। इसी तरह सबके गिनती बोल लेने के बाद शोभा ने कहा, 'सारे एक बोलने वाले मेरे साथ आ जाओ।' दो बोलने वाले सभी बच्चे शफ़ीक के साथ **'कागज का खेल : औरीगैमी'** वाले कमरे में

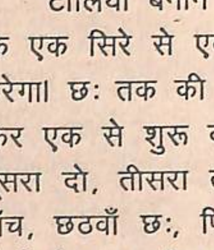

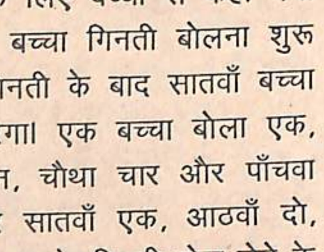

चले गए। इस तरह छः टोलियाँ बँट गईं। उनके साथ एक-एक भैया-दीदी भी बँट गए। नीता और राजेन्द्र भी अपने-अपने मनपसन्द कमरे में पहुँच गए।

स्कूल के शिक्षक अभी तक यह सब चुपचाप देख रहे थे। उनके दिमाग़ में कीड़ा कुलबुलाया कि अगर पैंतालीस मिनट के एक पीरियड में बच्चे थोड़ी देर बाद ही हलचल शुरू कर देते हैं तो फिर एक घण्टा तो उनके लिए सर्दियों में आम के आने का इन्तजार करने जैसा होगा। वे शिक्षक कुछ कमरों में गए। कुछ के दिमाग से कीड़ा खिसक लिया, कुछ खुद वहाँ से खिसक लिए। क्योंकि बच्चे तो अपने- अपने में मस्त थे। कोई कागज की चिड़िया बना रहा था, कोई चित्र बनाने में मशगूल था।

कमरा बदलने का समय हो गया था लेकिन अभी किसी की कहानी पूरी नहीं हुई, तो किसी का प्रयोग पूरा नहीं हो पाया। कहीं नक्शा पूरा नहीं हो पाया, तो किसी के मिट्टी के खिलौने में आँखें लगाना रह गई थीं। कुछ देर बाद घण्टा बजा, अब कमरा बदलना था। शफ़ीक जो **'कागज का खेल : ओरीगैमी'** वाले कमरे में था, उसने कहा कमरा

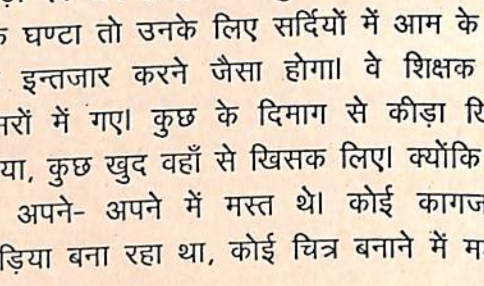

बदलने से पहले सब अपने आसपास का कचरा भी उठाएँगे और कमरे के बाहर रखे डिब्बे में डालेंगे। बच्चों ने अपना-अपना बनाया सामान और साथ ही कुछ कचरा भी उठाया और दौड़ पड़े दूसरे कमरे की तरफ। सब जानने को उत्सुक थे कि अब आगे क्या होगा। भगदड़ मच गई, थोड़ी देर गड़बड़ी-सी मची रही। कोई किधर चला गया, कोई कहीं।

लेकिन थोड़ी देर में ही स्थिति साफ़ हो गई। पर आगे के लिए यह तय कर लिया गया कि अब हर कमरे के बच्चे अपने बगल वाले कमरे में ही जाएँगे।

कमरों के अन्दर होने वाली हलचल के बारे में भी थोड़ा बता दें। **विज्ञान : करके देखो** वाले कमरे में रवि ने सबसे पहले उस कमरे के सभी बच्चों का परिचय कराया। सभी ने अपना नाम

बताया, कक्षा बताई। उसके बाद रवि ने बताया कि विज्ञान के जो प्रयोग यहाँ होने वाले हैं उन्हें हर कोई अपने आप ख़ुद करके देखेगा। जो आज नहीं कर पाएगा, कल करेगा। रवि के साथ नीता भी इसी कमरे में थी। सारे बच्चों को चार टोलियों में बाँट दिया। और हर एक टोली के लिए एक प्रयोग का सारा सामान रख दिया गया। उसी कमरे में चारों कोनों में चारों टोलियाँ रखे सामान को घेरकर बैठ गईं। फिर सारे 'वैज्ञानिक' जुट गए अपने-अपने काम में। कुछ इसी तरह की गतिविधियाँ सभी कमरों में चलती रहीं।

अभिव्यक्ति.... वाले कमरे में कोई कहानी लिख रहा था, कोई चित्र बना रहा था, कोई मिट्टी के खिलौने। **काग़ज़ का खेल** .... वाले कमरे में काग़ज़ को मोड़-मोड़कर कोई चिड़िया बनाना सीख रहा था तो कोई मछली। **'कुछ पास की, कुछ दूर की'** वाले कमरे में एक टोली नक्शा बना रही थी। तो एक टोली के बच्चे पुलिस स्टेशन और अदालत में होने वाली कार्यवाही पर चर्चा कर रहे थे। जिन

बच्चों को उनके शिक्षक कक्षा में चुप बैठा देखते थे उन्हें भी बोलते-चहकते सुन रहे थे।

इस तरह करते-करते मेले के पहले दिन का समय पूरा हुआ। फिर सब मैदान में इकट्ठे हो गए। अब तक सब एक-दूसरे के दोस्त बन चुके थे। हमीदा ने सब को एक-दूसरे का हाथ पकड़कर गोला बनाने को कहा। एक बड़ा-सा गोला तैयार हो गया। अब तक कई शिक्षक घर जा चुके थे। लेकिन जो बचे थे वो उत्सुकता से बच्चों के साथ खेल में भी शामिल हो गए। दो-तीन मैदानी खेल खेले गए। फिर सब अपने-अपने घर चल दिए। आज सबके पास ढेर-सी बातें थीं, ढेर-से अनुभव घर में बताने के लिए।

दूसरे दिन फिर लगभग यही सब हुआ, थोड़ा कुछ बदला भी था। बच्चों का उत्साह देखते ही बनता था। प्रश्न मंच में बच्चों का हल्ला-गुल्ला होने

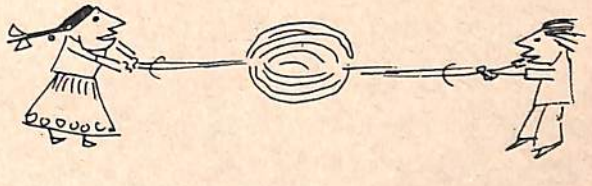

के बावजूद भी सभी को उत्तर देने की इच्छा थी। अन्त में बच्चों के द्वारा बनाई गई चीजों को उनके शिक्षकों ने, पालकों ने देखा और सराहा। बच्चों के चेहरे खुशी से दमक रहे थे। पढ़ाई के बोझ को

घसीटने की मजबूरी के बीच यह बाल-मेला एक खुली हवा के झोंके की तरह उनसे टकराया था।

तो यह एक उदाहरण था। इस तरह के मेले तुम भी अपने यहाँ कर सकते हो। पर यह ज़रूरी नहीं कि इस उदाहरण को तुम ज्यों का त्यों अपना लो। जगह, जरूरतें और हालातों पर गतिविधियाँ निर्भर करती हैं। अच्छा हो अगर हर बाल-मेले में पुरानी गतिविधियों में कुछ फेरबदल किया जाए। इससे गतिविधि करवाने वाले समूह को भी लगातार उत्साह और नया कुछ करने की चाह बनी रहेगी।

मेले के ढाँचे को बदलने की आजादी तुम्हारे पास है पर यह ध्यान रखना कि उसमें बच्चों की भागीदारी में कमी नहीं आए। स्कूल में किए जाने वाले बाल-मेला में यदि ऐसा लगे कि सारी कक्षाओं के बच्चे एक साथ भाग नहीं ले पाएँगे तो अलग-अलग दिन अलग-अलग कक्षाओं के लिए बाल-मेले रखे जाएँ। तुम्हारे गली-मोहल्ले में बाल-मेला करते समय शायद इतने अलग-अलग कमरे न मिलें तो एक दिन में दो या तीन गतिविधियाँ रखो, बाक़ी दूसरे या तीसरे दिन करो। और अगर आसपास के छोटे-छोटे बच्चे - मतलब बहुत छोटे बच्चे भी इकट्ठे हो जाएँ तो उन्हें मैदानी खेल खिलवा सकते हो।

अब बात आती है यह कि सेमरीखुर्द वालों ने तो चकमक क्लब से अपने दोस्तों को बुला लिया। तुम्हें अगर ऐसी जरूरत लगे तो तुम क्या करोगे। सबसे पहली बात तो यह कि चकमक के इस अंक में पढ़कर अपने शिक्षक या किसी बड़े की मदद से तुम बाल-मेला कर सकते हो। इसी अंक में गतिविधियों के कुछ उदाहरण भी हम दे रहे हैं। उनमें जोड़-घटाकर तुम अपने हिसाब से गतिविधियाँ बनाओ। इसके अलावा अगर तुम्हारी जानकारी में आसपास कहीं चकमक क्लब है, तो उनसे सम्पर्क करो।

मेले के लिए ज़रूरी सामान अपने ही गाँव से जुगाड़कर इकट्ठा करो तो अच्छा वरना हर चीज ख़रीदने जाओगे तो दिवाला निकल जाएगा। एक बात यहाँ ध्यान रखने वाली है कि मेले में होने वाली गतिविधियाँ ऐसी हों जिनमें लगने वाला सामान ज्यादा महंगा न हो और अच्छा हो कि अपने घर के कबाड़े से निकाल सको। कुछ चीज़ें ख़रीदनी ही पड़ें तो उनके लिए आपस में चंदा करके काम चला सकते हो।

और भाई मेला करोगे तो एक - दूसरे से दोस्ती बढ़ेगी, नए दोस्त भी बनेंगे और मजा तो आएगा ही। जो भी हो अपने मेले की खबर हमें जरूर भेजना। क्या पता हम भी पहुँच जाएँ।

(रेखाचित्र 'समझ के लिए तैयारी' से साभार!)

कथा रावण की

❑ योगेन्द्र दवे

[राजू मास्टर जी बना पिंकी को पढ़ा रहा है।]

राजू : क्यों पिंकी! समझी?

पिंकी : सब कुछ समझ गई राजू भैया।

राजू : बता क्या समझी?

पिंकी : जो तुमने समझाया।

राजू : मैंने तो कई बातें समझाईं।

पिंकी : मैंने भी कई बातें समझीं।

राजू : उफ्! मैं पूछ रहा हूँ क्या समझी? जानती नहीं इस वक्त मैं तेरा टीचर हूँ।

पिंकी : टीचर जी! तुम न जाने क्या-क्या पढ़ाते हो...अपने पल्ले कुछ नहीं पड़ता, मेरा काम यस सर-यस सर करना है - सो कर रही हूँ। भूल गए पापा ने क्या कहा था?

राजू : क्या कहा था?

पिंकी : कहा था - जब एक जना पढ़ाए दूसरा यस सर, यस सर कहेगा।

राजू : बुद्धू कहीं की... यस सर-यस सर के साथ एक - दूसरे की ग़लती भी निकालनी है।

पिंकी : अरे राजू भैया। मैं तीसरी में, तुम छट्ठी में... भला मैं कैसे जान सकती हूँ कि तुमने ग़लत समझाया या सही।

राजू : *(कुछ सोचकर)* अच्छा बाबा... हिन्दी पढ़ाता हूँ...तुम्हारी समझ में आ जाएगी...विज्ञान तुम्हारे बस की बात नहीं।

पिंकी : विज्ञान न हिन्दी.. घण्टे भर से बोले चले जा रहे हो...अब मेरी बारी है...कहे देती हूँ बीच में मत बोलना....कोई ग़लत बात हो तो हाथ खड़ा कर देना।

राजू : अच्छा...चल बोल...फटाफट शुरू हो जा... पिद्दी तो पिद्दी रहेगी।

पिंकी : क्या कहा पिद्दी!

राजू : एक बार नहीं हजार बार पिद्दी-पिद्दी....

[पिंकी राजू पर झपटती है...राजू दूर हट जाता है। पिंकी गिर पड़ती है और रोने लगती है।]

राजू : अरेऽऽरेऽऽ तू तो रोने लगी...अच्छा मेरी छोटी सी पिद्दी।

पिंकी : क्या कहा?

राजू : पिंकी...पिंकी..पिंकी...तू रोना बन्द कर।

पिंकी : पहले बताओ मैं क़ौन हूँ।

राजू : पिंकी हो..पिंकी...पिद्दी नहीं।

पिंकी : हाँ दिमाग में कुछ भूसा कम हुआ न!

राजू : भूसा तो कम होना ही था - तूने चर जो लिया। *(पिंकी के पास जाकर)* तू पिद्दी नहीं पिद्दा है...

[पिंकी फिर रोने लगती है।]

राजू : अरे चुप भी कर...न तू पिद्दी, न तू पिद्दा...तू तो है पिंकी महारानी।

पिंकी : आने दे पापा को - कैसी ठुकाई करवाती हूँ।

राजू : पापा को बाद में कहना...पहले तू अपना पाठ सुना - और छुट्टी कर... मुझे अभी बहुत सा काम करना है।

पिंकी : *(मास्टर जी की तरह)* दिन भर क्रिकेट खेलते हो...शाम को होमवर्क याद आता है।

राजू : बकवास मत कर...फटाफट अपना पाठ सुना, पापा आने वाले होंगे।

पिंकी : टीचर जी के सामने बोलते हो...चलो निकालो हाथ।

[*राजू उठ कर पिंकी के कान उमेठ देता है।*]

पिंकी : अरे रे...छोड़ो कान...अब नहीं करूँगी ***(राजू बैठ जाता है)*** हाँ, अच्छे बच्चों की तरह बैठ जाओ - आज मैं राम-रावण युद्ध के बारे में पढ़ाऊँगी। बताओ रावण कौन था?

राजू : रावण, रावण था और कौन था?

पिंकी : मैं पूछ रही हूँ- रावण कहाँ का राजा था?

राजू : लंका का।

पिंकी : लंका किसकी थी?

राजू : रावण की।

पिंकी : अरे बुद्धू! रावण की लंका नहीं...लंका सोने की थी।

राजू : सोने की हो या जागने की...मुझे क्या।

पिंकी : उफ! मेरा तो दिमाग खराब हो जाएगा...लंका सोने की बनी हुई थी... गोल्ड....गोल्ड।

राजू : लंका में ईंट, पत्थर, चूना नहीं था क्या?

पिंकी : मुझे नहीं मालूम।

राजू : जा मालूम करके आ।

पिंकी : ***(गुस्से से)*** चुप रहो....मैं बता रही हूँ - रावण सोने की लंका का राजा था।

राजू : ग़लत...एकदम गलत।

पिंकी : कैसे?

राजू : रावण लंका का प्रधानमन्त्री था।

पिंकी : नहीं राजा था।

राजू : प्रधानमन्त्री था...बता राजा और प्रधानमन्त्री में क्या अन्तर होता है?

पिंकी : राजा राजा होता है और...

राजू : प्रधानमन्त्री...प्रधानमन्त्री होता है...अरी बुद्धू इनमें अन्तर क्या होता है...बता न?

पिंकी : ***(रूँआसी होकर)*** अन्तर पता नहीं...अब आगे भी सुनो न!

राजू : बोल फटाफट बोल।

पिंकी : राजा रावण की बड़ी-बड़ी मूँछें थीं ....बड़ी-बड़ी आँखें थीं...बड़े-बड़े होंठ थे....राक्षस था-राक्षस।

राजू : बिल्कुल तेरे गणित के टीचर जैसा।

पिंकी : हाँ...हाँ...बिल्कुल वैसा ही बड़ी-बड़ी आँखें...बड़ी-बड़ी मूँछें...बाप रे देखते ही डर लगता है।

[*मंच पर कुछ क्षण अंधकार...मास्टरजी का रावण के वेश में प्रवेश।*]

मास्टरजी : हऽऽ ह...मैं मास्टर ...मैं मास्टर....तुमने मुझे रावण कहा...मैं रावण हूँ? बोलो पिंकी मैं रावण हूँ?

पिंकी : हाँ...हाँ रावण अंकल।

मास्टरजी : क्या कहा?

पिंकी : नहीं-नहीं....आप मास्टर जी हैं।

मास्टरजी : जानती हो रावण सबको डराता था....मारता था....खा जाता था।

राजू : पिंकी डर मत....कह दे आप रावण हो।

पिंकी : सर! मारते तो आप भी हैं।

मास्टरजी : रावण बिना बात के सबको मारता था।

पिंकी : आपने भी बिना बात के मारा....मेरा होम वर्क पूरा था फिर भी मुझे बैंच पर खड़ा किया।

राजू : पिंकी को कम नम्बर दिए - बबलू-गबलू को ज्यादा-क्योंकि वे आपसे ट्यूशन करते हैं।

मास्टरजी : तुम्हें कैसे पता?

राजू : पिंकी ने बताया।

मास्टरजी : तुमने बताया।

पिंकी : हाँ....मैंने बताया।

राजू : ये भेदभाव क्यों?

पिंकी : इसीलिए आप रावण हैं।

मास्टरजी : नहीं....नहीं....मैंने कभी किसी के साथ भेदभाव नहीं किया। सबको बराबर समझा।

पिंकी : नहीं....मैं झूठ नहीं बोलती - ये देखो आपकी बड़ी-बड़ी मूँछें....बड़ी-बड़ी आँखें....।

[मास्टरजी अपने मुँह पर हाथ फेरते हैं - मूँछों पर हाथ जाते ही घबरा कर मंच छोड़ चले जाते हैं। दोनों बच्चे हँसते हैं।]

(यह 'कथा-रावण की' नाटक का एक अंश है। शेष नाटक में लेखक ने कम तौलने और मिलावट करने वाले दुकानदार तथा बासी मिठाई बेचने वाले हलवाई में भी रावण का रूप दिखाया है। क्या तुम खुद इस नाटक को आगे बढ़ा सकते हो! अगर बढ़ा पाओ तो हमें भी लिखना।)

माथापच्ची

तरह-तरह के सवालों के हल निकालना या कहें कि कोई भी ऐसी समस्या जिसका हल निकालते हुए, उसके बारे में जितनी बातें हो सकती हैं उन सब पर सोच-विचार करना यानी कि माथापच्ची। अब इसमें ज़रूरी नहीं कि सवाल गणित के हों या किसी ख़ास विषय के। समस्या तो समस्या है, कैसी भी हो, हल निकालना मुख्य बात है। और हल निकालने के लिए माथापच्ची तो होगी ही।

जैसे कि किसी ने कोई पहेली कह दी। अब बूझने से पहले सभी अपना-अपना दिमाग़ लगाएँगे। इसके अलावा कुछ मज़ेदार खेल हो सकते हैं। जिनमें चार या पाँच लोग मिलकर समस्या या पहेली को सुलझाएँ। और फिर मिल-जुलकर हल निकालने का मज़ा ही कुछ और होता है। या फिर प्रश्नोत्तरी की व्यवस्था करके अकेले-अकेले को भी मौक़ा दिया जा सकता है।

यह दिमाग़ लगाकर, सोच-समझकर खेलने वाला खेल है और मज़ेदार भी है। लेकिन ऐसा भी नहीं कि कुछ ख़ास लोग ही इसमें भाग ले सकते हों। क्योंकि किसी एक का दिमाग़ किसी विषय में ज़्यादा चलेगा तो दूसरे का किसी दूसरे विषय में आगे होगा।

शब्द पहेली

एक खेल शब्दों वाला भी किया जा सकता है। इस खेल में नौ चौखानों का या उससे ज़्यादा चौखानों वाला चार्ट लो। इनमें हर खाने में एक-एक अक्षर या मात्राएँ होंगी। कोई एक अक्षर चार्ट के बाहर लिख दो। अब करना यह है, इन सभी अक्षरों का उपयोग करते हुए कोई शब्द बनाओ। लेकिन शर्त यह है कि हर शब्द में चार्ट के बाहर लिखे अक्षर का उपयोग ज़रूर हो। एक ही तरह के चार्ट एक से ज़्यादा हो सकते हैं। फिर जितने चार्ट हों उतनी टोलियों में बच्चे बँट जाएँ और अपने-अपने अक्षर अपनी कॉपी पर लिखते जाएँ। देखो कितने अलग-अलग, कितने बड़े, कितने छोटे शब्द बने। टोली का हर बच्चा अलग शब्द बनाए या फिर सारी टोली मिलकर शब्द बनाए। अलग-अलग तरह के चार्ट भी बनाए जा सकते हैं, ताकि टोलियाँ चार्ट की अदला-बदली कर सकें। चार्ट का एक नमूना यहाँ दिया जा रहा है।

ल

क	ई ी	आ, ा
ग	स	र
न	म	ह

पहेली बूझना

इस खेल के लिए तुम्हारे जितने भी साथी हैं उन सब की टोलियाँ बना लो। अब दो टोलियों में बँट जाओ, चाहो तो ज़्यादा टोली भी बना सकते हो। हर टोली में से कोई एक पहेली पूछे, दूसरी टोली से जवाब मिले। पहेली आमतौर पर जो प्रचलित हों वो न पूछो तो ज़्यादा अच्छा होगा, क्योंकि प्रचलित पहेलियों के हल भी प्रचलित होते हैं। करना यह चाहिए कि अपने आसपास की चीज़ों पर पहेली खुद बनाओ और यह तो बहुत ही मज़ेदार काम है। इसमें यह भी कर सकते हो कि सही उत्तर बताने पर कुछ अंक देते जाओ। उदाहरण के लिए कुछ पहेलियाँ यहाँ दे रहे हैं।

पहेलियाँ

इधर चमड़ी उधर चमड़ी
लेकिन बीच में है लकड़ी

❑ **चंचल अग्रवाल, चारखेड़ा, हरदा, म.प्र.**

काली माँ लाल हैं बच्चे
जहाँ जाए माँ वहाँ जाएँ बच्चे।

❑ निलेश कुमार विजंवा, हाट पिपल्या, देवास, म.प्र.

संगमरमर का दुर्ग बना
जिसमें कोई न द्वार
अन्दर सागर बीज का
ढोए पूरा भार।

❑ अजय मानकर, टिमरनी, म.प्र.

रोज शाम को आती
रोज सबेरे जाती हूँ
नींद न समझना मुझको
फिर भी तुम्हें सुलाती हूँ।

❑ लोकेश्वर सिन्हा, केदुवाँ, बिहार

राजाजी के राज में नहीं
माली के बाग में नहीं
फोड़ो तो गुठली नहीं
खाओ तो स्वाद नहीं।

❑ चन्दगोपाल मोकाती, नौसर, टिमरनी, म.प्र.

जोड़कर देखो

इस खेल में चार अंकों को जोड़कर बड़ी संख्या बनाना है। इसके लिए तुम अपनी टोली में से कोई चार बच्चों को चुन लो या बच्चे अपनी मर्जी से निकलकर आएँ। चारों को नम्बर दे दो। 1, 2, 4 और 8, चाहो तो नम्बर किसी बड़े से कागज पर लिखकर उनके हाथ में पकड़ा दो या पीठ पर चिपका दो।

अब बाक़ी बैठे लोग कोई संख्या बोलें और चारों अपने अंक से जोड़ कर संख्या बनाएँ। जैसे किसी ने कहा दो, तो दो अंक अपना हाथ उठाए फिर किसी ने कहा छः तो दो अंक और चार अंक दोनों हाथ उठाएँ। इन चारों अंकों से कितनी ज्यादा से ज्यादा संख्या बना सकते हो। अंक वाले थोड़ी देर में बदल जाएँ। और नए उनके स्थान पर आ जाएँ। इन चार अंकों से कितनी गिनती गिन पाए? आगे की गिनती के लिए एक और सदस्य जोड़ लो। अब कितनी गिनती गिन पाए? और आगे की गिनती के लिए अब कौन-सी संख्या का सदस्य जोड़ोगे? खोजो और करो। इस खेल को इकाई, दहाई, सैंकड़ा... के मान से भी खेला जा सकता है। कैसे? खुद सोचो।

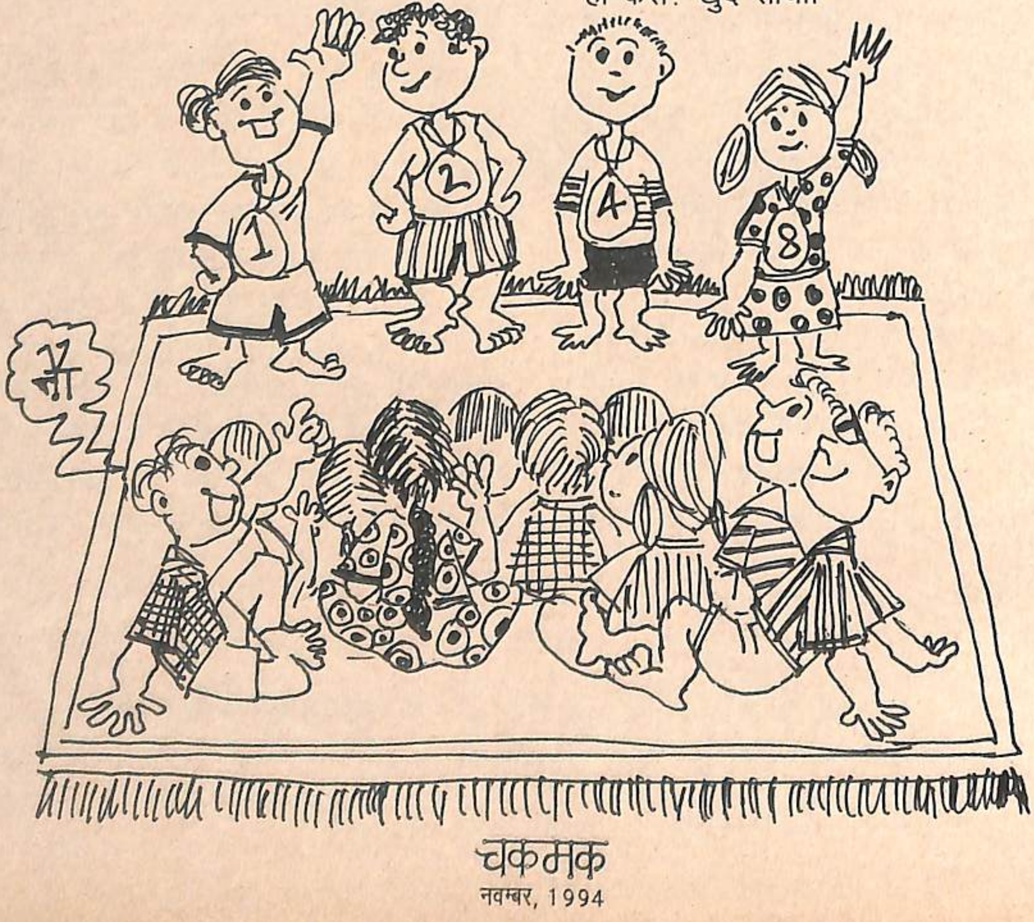

चित्र : शिवेन्द्र पाँडिया

अभिव्यक्ति यानी अपने मन की बात कहना

अभिव्यक्ति यानी कि हम जो कुछ अपने अन्दर सोचते-समझते हैं उसे दूसरों को बताने का तरीक़ा। मतलब अपने को व्यक्त करने को ही अभिव्यक्ति कहते हैं।

अब अगर तुम्हें कहा जाए कि तुमने किसी एक दिन सुबह से लेकर शाम तक क्या-क्या देखा? उसे कैसे बताओगे? तुम शुरू करोगे, एक-एक बात बताओगे और बीच-बीच में तुम उन घटनाओं के बारे में क्या सोचते रहे, वो भी बताते जाओगे तो, इस तरह तैयार हो जाएगा सुबह से शाम तक घटी घटनाओं का ख़ाका। अब अगर तुम इसे अपनी भाषा में कुछ जोड़-घटा कर, कुछ मज़ेदार-सी बातें मिलाकर लिख दो, तो एक अच्छी कहानी तैयार हो जाएगी।

इसी तरह किसी घटना, दृश्य या चित्र को देखकर तुम्हें क्या लगा? क्या भाव, विचार तुम्हारे मन में आए उन्हें कहानी, कविता का रूप देकर लिख दो या फिर चित्रों के माध्यम से काग़ज़ पर उतार दो, तो इसे तुम्हारी अभिव्यक्ति ही कहा जाएगा।

हममें से ऐसा कोई नहीं जो अपनी बात किसी दूसरे को बताना न चाहता हो। अक़्सर हम अपने दोस्तों से मिलते हैं और ख़ूब बातें भी करते हैं, लेकिन यह तो एक आम तरीक़ा है। हम अपनी बात कहानी या कविता लिखकर, चित्र बनाकर या गीत, संगीत, नाटक के माध्यम से भी दूसरों को बतातें, हैं, उसे कई-कई लोगों तक पहुँचाते हैं।

सिर्फ़ यही नहीं वाद-विवाद, भाषण, किसी विषय पर बोलना आदि तरीक़े भी हैं अपने को अभिव्यक्त करने के। बाल-मेले में 'अभिव्यक्ति' में ये सब चीज़ें नए-नए रूपों में करवाई जा सकती हैं। जब जहाँ जैसी ज़रूरत लगे जैसी सुविधा हो, ये चीज़ें सोची और की जा सकती हैं। यहाँ हम कुछ गतिविधियाँ सुझा रहे हैं। इनके अलावा तुम ख़ुद और गतिविधियाँ सोच सकते हो। मिल-जुलकर कर सकते हो।

हमारे ख़्याल से इन गतिविधियों को प्रतियोगिता का रूप न दिया जाए तो बेहतर है। क्योंकि हरेक की अभिव्यक्ति के अपने तरीक़े हो सकते हैं, अपनी क्षमता हो सकती है। उसकी नाप-तौल करना ठीक नहीं।

मिलकर एक कहानी बनाना

सब अलग-अलग कहानी या कविता लिखें यह तो एक बात है, लेकिन सब मिलकर लिखें यह भी तो हो सकता है।

इसके लिए सब एक गोले में बैठ जाएँ और पहले कोई एक वाक्य बोले या दो तीन वाक्य भी बोल सकते हैं। और उसके पास वाला उसी वाक्य के आगे वाक्य जोड़े, इस तरह जिससे कि पिछले वाक्य की बात ही आगे बढ़े। फिर उसके बाद वाला, उसके बाद, उसके बाद वाला। इस तरह गोला पूरा हो जाएगा। हाँ एक चीज़ और करो। कोई एक व्यक्ति गोले से अलग बैठ जाए कागज-पेन लेकर और सबके बोले वाक्य लिखता जाए। अन्त में जब सब बोल चुकें तो पूरी लिखी गई कहानी को पढ़ा जाए। देखो कहानी कहाँ से कहाँ पहुँच गई? इसी तरह कविता भी लिखी जा सकती है। इसी गतिविधि को छोटी टोलियों में भी कर सकते हो।

नाटक तैयार करना

सबसे पहले चार-चार या पाँच-पाँच की टोलियों में बँट जाओ। उसके बाद हर टोली अपने लिए विषय चुन ले। या पहले ही सब मिलकर विषय चुनें और उसमें से विषय बाँट लें।

विषय चुन लेने और टोली में बँट जाने के बाद दस-पन्द्रह मिनट के लिए सब टोलियाँ अलग-अलग हो जाएँ। मतलब अपनी-अपनी टोली में रहकर तैयारी करें। तैयारी यह कि हर टोली अपने विषय पर एक छोटा-सा नाटक तैयार करे, चार-पाँच मिनट का।

इस तैयारी में करना यह होगा कि मान लो एक टोली में पाँच सदस्य हैं और विषय है 'खेल का मैदान'। तो पहले तो विषय को किस तरह प्रस्तुत करना है इस पर जल्दी से सोचो। फिर जिस तरह प्रस्तुत करना है उसके हिसाब से एक छोटी कहानी गढ़कर उसके पात्र बना लो। फिर जिसको जिस पात्र की भूमिका निभाना है, वह क्या बोलेगा यह तय करो। सारी चीजें तय हो जाने पर एक बार रिहर्सल कर लो। ये सारी बातें पाँचों मिलकर करो।

फिर सारी टोलियाँ एक जगह जमा हों और एक-एक करके अपना नाटक प्रस्तुत करें। सभी टोलियों के प्रदर्शन हो जाने के बाद सब लोग साथ बैठकर चर्चा करें कि किसने क्या किया, कैसा किया! और क्या-क्या किया जा सकता है, यह सोचा जाए और आगे की बातें तय की जाएँ।

चित्र देखकर कहानी या कविता लिखना

तीन-तीन या चार-चार की टोलियाँ बना लो। और हर एक टोली के पास एक चित्र हो। चित्र छपा हुआ हो या किसी के हाथ का बना हुआ भी हो सकता है। चित्र में दृश्य फैला हुआ हो, कई घटनाएँ दिख रही हों तो और अच्छा। चित्र को बीच में रखकर टोली वाले उसके चारों ओर बैठ जाएँ। बस जिसको जो ठीक लगे, समझ आए, लिखे- कहानी या कविता, अपने शब्दों में, अपने मन से। एक ही चित्र के बारे में टोली के हर व्यक्ति की अलग ही रचना होगी। होनी ही चाहिए क्योंकि हर व्यक्ति अपने आप में एक ही होता है।

एकल अभिनय

मिल-जुलकर टोलियों में बँटकर नाटक तैयार करना तो एक बात हुई। दूसरी बात यह हो सकती है कि अलग-से अकेले-अकेले अभिनय करना। इसके लिए पहले कागज की छोटी-छोटी पर्चियों पर कुछ बातें लिख लो। जैसे-खाना खाना, बाग में घूमना, हजामत बनाना या ऐसी ही बहुत-सी बातें। पर्ची बनाते समय यह ध्यान रखना कि जो विषय लिख रहे हो वह ऐसा हो जिसे अभिनय करके बताया जा सके। इन पर्चियों को मोड़कर किसी डिब्बे या बरतन में डाल दो। अब एक-एक करके अपने साथियों को बुलाओ। एक आए और एक पर्ची उठाए। वह पर्ची खोलकर देखे, उसमें जो लिखा है उसका अभिनय करके दिखाए, बिना बोले। बाक़ी को उसे देखकर यह बताना है कि पर्ची में क्या लिखा है।

वैसे इसमें नियमों की जरूरत तो नहीं पर अपने-अपने तरीक़े बनाए जा सकते हैं। जैसे कि या तो एक गोले में बैठकर एक के बाद एक क्रम से पर्ची उठाएँ या किसी गाने की कोई लाइन चुन कर गाना गाया जाए और तब तक पर्ची वाला डिब्बा एक से दूसरे हाथों में घूमता रहे। और जैसे ही गाना खत्म हो उस समय जिसके हाथ में डिब्बा हो वह पर्ची उठाए। तरीक़ा कोई भी हो सभी को मौका मिले तो मजा आएगा।

चित्र बनाना

चित्र तो सभी बनाते ही हैं, पर मेले में बहुत सारे बच्चे मिलकर जब चित्र बनाते हैं तो कुछ अलग ही बात होती है। चित्र बनाने के लिए कागज, रंग, ब्रश जुटा पाना सभी के लिए आसान नहीं होता। लेकिन कुछ आसान तरीक़े हैं। रंगों के लिए अपने आसपास ही मिलने वाली सस्ती चीजें इस्तेमाल करो। जैसे सफ़ेद रंग चॉक या खड़िया को घोलकर बना लो। पीला रंग हल्दी से, सिन्दूर, गेरू, रोली, नील से भी रंग मिल जाएँगे। लाल रंग, हल्दी और खाने का सोडा मिलाकर भी बना सकते हो। जो चीजें पानी में आसानी से न घुलें उन्हें गोंद मिलाकर घोलो। छोटी लकड़ी (पेंसिल के बराबर) में रूई या कपड़ा बाँधकर उसे ब्रश की तरह इस्तेमाल कर सकते हो। चित्र बनाने के लिए ऐसे कागज भी ले सकते हो जिनमें एक तरफ लिखा हुआ भी हो। चित्र तो एक तरफ ही बनाना है न।

चित्र बनाने के लिए तो सभी को छूट है कि जो चाहे जैसा चित्र बनाए। लेकिन विषय भी दिए जा सकते हैं। इसके अलावा कई तरह से यह गतिविधि की जा सकती है जैसे कि पुराने अखबार लो उन्हें अलग-अलग आकार में फाड़ लो। फिर उन टुकड़ों को कुछ इस तरह से चिपकाओ कि कुछ नया आकार बने। और वैसे यह तो बनाने वाले की अपनी मर्जी पर निर्भर करता है कि वो क्या बनाना चाहता है।

इसके अलावा फूल, पत्ती, पेंसिल की छीलन आदि को चिपकाकर कोई आकृति बना सकते हो और बाक़ी जगह पर रंग भी कर सकते हो।

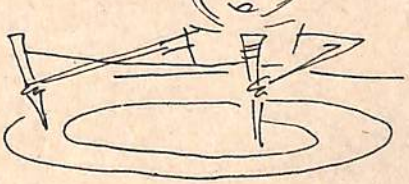

अभिव्यक्ति की गतिविधियाँ तो बहुत हो सकती हैं। तुम जिस तरह अपनी बात रखना चाहो उस तरह से रखो। तो और नई-नई चीजें इसमें जोड़ना और हमें भी बताना। ❑❑

बाल - मेला

बाल मेले का आयोजन है।
मौज मनाने का ये दिन है।
प्रतिबंधों से छुट्टी लेकर
हा हा हू करने का मन है।

हा हा हू से अपना मतलब
हँसने और हँसाने से है।
नाच बजाकर गाने से है,
गीतों में रम जाने से है।
खेल खेल में सीख सकें
ऐसा माहौल बनाने से है।
सिखलाने वाले भी खुश हों,
इस मेले का यही जतन है।
बाल मेले का आयोजन है
मौज मनाने का ये दिन है।

सूखे पत्ते, तिनके गुठली
जोड़ बनालो अजब खिलौने।
ओरीगैमी कला अनोखी
काग़ज़ को दे रूप सलौने।
साबित कर विज्ञान दिखा दे
झूठे हैं सब जादू टोने।
माथा पच्ची, गणित-पहेली
में भी एक सुरीली धुन है।
बाल मेले का आयोजन है
मौज मनाने का ये दिन है।

चित्रकला तो खेल ही पूरा
इन्द्रधनुष जैसा सतरंगा।
हर बच्चे को लुभा रहा
विज्ञान खेल का गोरख धंधा।
कहो कहानी या हो कविता
रहता हो मन जिसमें चंगा।
पिंजरे के घेरे टूट गए तो
चहक रहा अपना बचपन है।
बाल मेले का आयोजन है,
मौज मनाने का ये दिन है।

❑ उमाकान्त द्विवेदी

चित्र : अक्षत चराटे

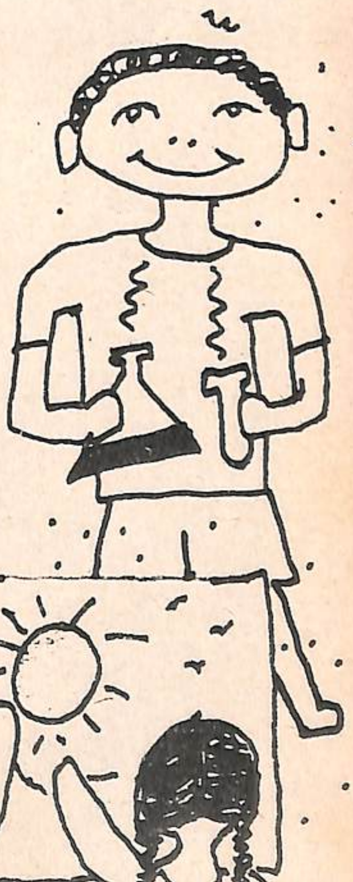

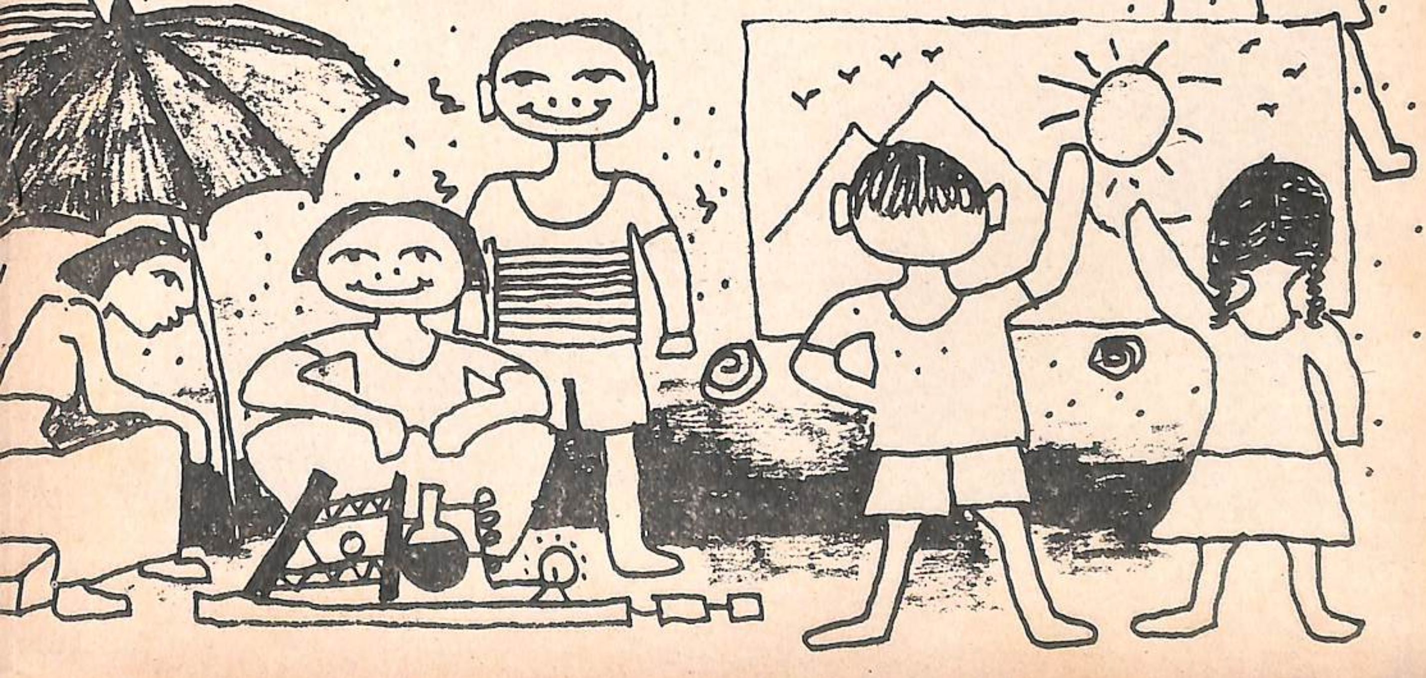

तुम भी बनाओ

खिलौने तो तुम सब यूँ भी बनाते हो। कोई काग़ज़ को काट-कर कुछ बनाता है, कोई कुछ कबाड़ को नया रूप देकर कुछ बना लेता है। बस इसी तरह की गतिविधियाँ इसमें कर सकते हो। ढेरों चीज़ें बनती हैं। मेले में भाग लेने वाले सभी बच्चे कुछ न कुछ जानते हैं। एक-दो गतिविधियाँ मेले में तुम करवा दो, फिर दूसरे बच्चों से कहो उन्हें जो आता हो दूसरों को बताएँ।

कागज, माचिस के खाली डिब्बे, लकड़ी के टुकड़े, नारियल की खपड़ी, ऐसी ही कई चीजों से कितनी ही नई चीजें बनाई जा सकती हैं। यहाँ दी हुई गतिविधियों में जिस ज़रूरी सामान का ज़िक्र किया है, ज़रूरी नहीं कि तुम वही सामान ढूँढो। उससे मिलता-जुलता जिससे काम चल सके और जो तुम्हें आसानी से मिल सके।

चलती फिरती पुतली

इसके लिए लिखकर बताने की तो ज्यादा कुछ जरूरत नहीं। इसके चित्र देखकर ही तुम समझ गए होगे कि क्या करना है। मनचाही आकृतियाँ काटो, रंग लो और अपनी उँगलियों के हिसाब से छेद बना लो। बस छेद में उँगली पिरो कर चलाओ पुतली। यहाँ जो चित्र दिए हैं उनके अलावा भी अगर कोई चित्र बना सको तो नए-नए प्रयोग ज़रूर करना।

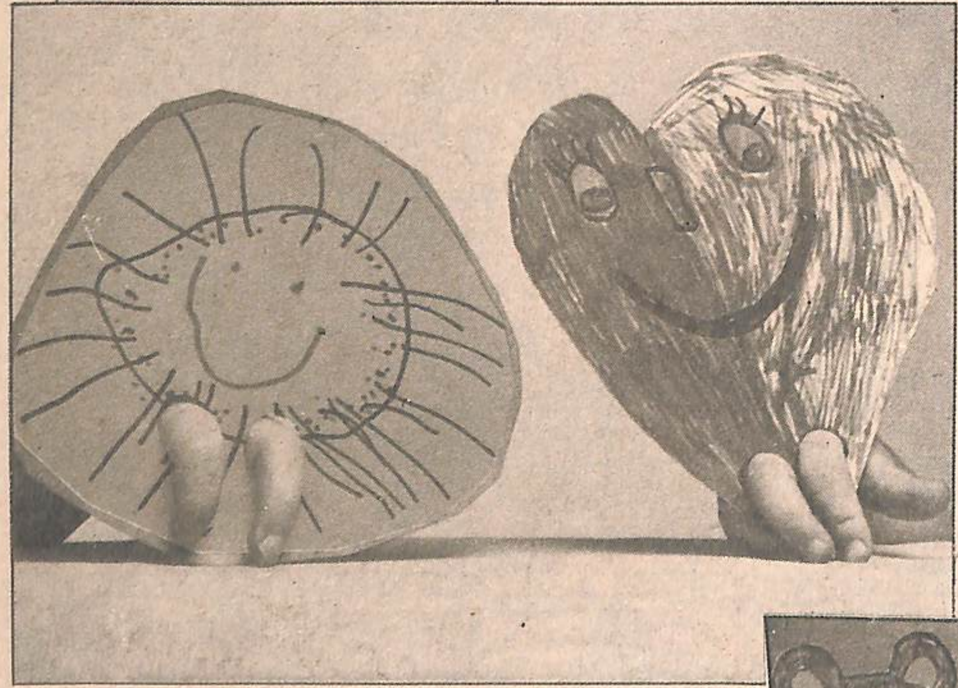

बिल्ली

कागज़ की लम्बी पट्टियाँ काटकर पंखे की तरह मोड़ लो। बीच में एक रबरबेण्ड या धागे से बाँध लो। इसके बाद पंखे के दोनों सिरों को चिपका लो। चित्र में देखो किस तरह चिपकाना है। उसके बाद तुम्हारे पास एक गोल आकृति होगी।

इस गोले पर बिल्ली के आँख, नाक, मुँह बना लो, रंगों से या कागज़ के टुकड़े चिपका कर। बिल्ली के अलावा कुछ और भी बना सकते हो।

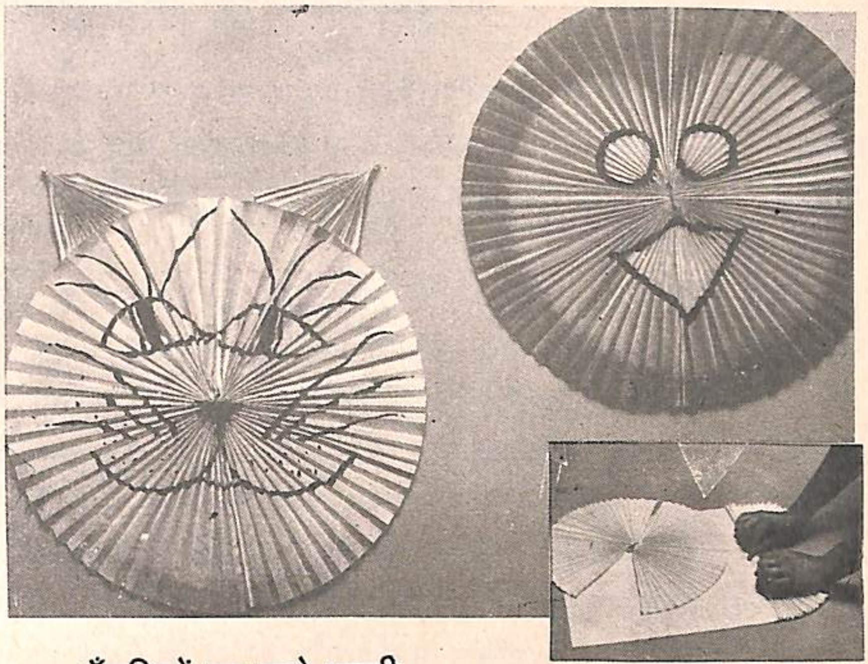

उँगलियों पर नाचे पुतली

इसके लिए तुम्हें चाहिए - रंगीन मोटा कागज़, गोंद, स्केचपेन या रंग, पेंसिल, कागज़।

सबसे पहले कागज़ पर पेंसिल से मनचाही आकृति बना लो। अब आकृति काट कर दूसरे रंग-बिरंगे कागज़ से सजा लो।

इसके बाद इन तैयार चित्रों के पीछे की तरफ कागज़ के छोटे-छोटे छल्ले बनाकर चिपका लो, जिसमें उँगली पिरो सको।

अब इन पुतलियों को उँगलियों में पिरोकर चलाओ। यहाँ चित्र में दिखाई गई आकृतियों के अलावा तुम अपने मन से और दूसरी आकृतियाँ भी बना सकते हो।

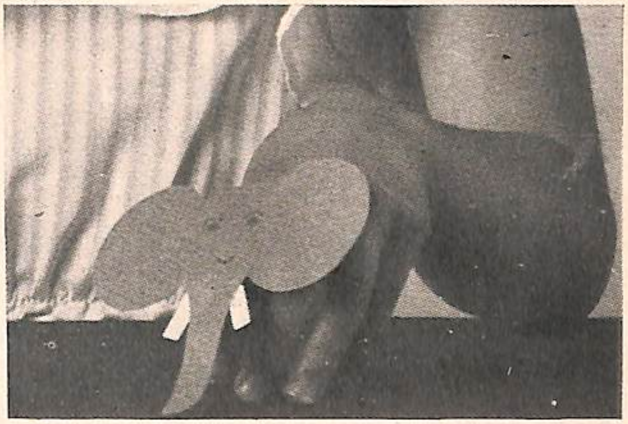

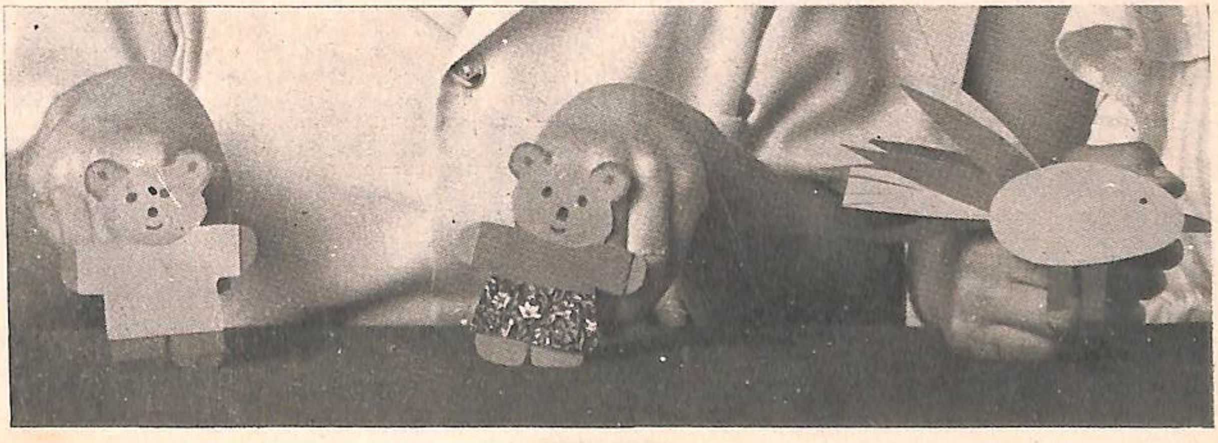

विज्ञान : करके देखो

क्या तुमने कभी अपने आसपास कोई वैज्ञानिक देखा है? क्या कहा, नहीं देखा। हो ही नहीं सकता। भई वैज्ञानिक सिर्फ़ बड़ी-बड़ी प्रयोगशालाओं और विश्वविद्यालयों में ही थोड़े होते हैं। हम-तुम ख़ुद भी कई ऐसे काम करते हैं, इस तरह से करते हैं कि उनके लिए हमें वैज्ञानिक कहा जा सकता है।

अब रज़िया की अम्मी को ही लो। परसों रज़िया के बाबू राशन की दुकान से चावल लाए थे। अम्मी ने चावल रोज़ की तरह ही पकाया। जब हंडिया उतारी और कुछ दाने दबाकर देखे तो वे पूरे पके न थे। उन्होंने थोड़ा और पानी डालकर अधपके चावल को थोड़ा हिलाया और हंडिया को फिर आग पर चढ़ा दिया।

रज़िया की अम्मी ने चावल पकाने का, पका है कि नहीं यह जाँचने का एक तरीक़ा अपनाया। जब चावल पूरा पका न था तो आगे क्या करना है यह भी सोचा और किया। वास्तव में यह सारी प्रक्रिया एक वैज्ञानिक प्रक्रिया ही तो है। तो इस तरह रज़िया की अम्मी भी वैज्ञानिक हुईं। ऐसे ही तुम भी वैज्ञानिक बन सकते हो। अपने आसपास की चीज़ों को देख-परखकर, साधारण उपकरण कैसे काम करते हैं, यह समझकर, कुछ वैज्ञानिक सिद्धान्तों पर चलने वाले मज़ेदार खिलौने बनाकर।

ख़ुशी से फूलकर कुप्पा!

यह एक और ऐसा प्रयोग है जिसमें अगर हम थोड़ी तैयारी करके एकाध बच्चे को लगा दें उसमें, तो ढेर सारे और बच्चे अपनी उत्सुकतावश इसकी ओर खिंचे चले आते हैं।

इसे बनाने के लिए एक ख़ाली ग्लूकोज़ की बोतल, ग्लूकोज़ बोतल का रबर का दो छेद वाला ढक्कन, दो काँच की नली (या प्लास्टिक के दो ऐसे बॉलपेन जो दोनों सिरों से खुले हों और रबर कार्क के छेदों में आसानी से फँस जाएँ), एक गुब्बारा, धागा, मोमबत्ती और माचिस चाहिए।

①

अब शुरू करते हैं। पहले ग्लूकोज़ बोतल के ढक्कन में दोनों नलियाँ या पेन फँसा दो (**चित्र-1**)। फिर एक नली में अन्दर वाली ओर गुब्बारा लगा लो। गुब्बारा नली में लगा रहे इसलिए उसे धागे से बाँध लो (**चित्र- 2**)। अब ढक्कन ग्लूकोज़ की बोतल में फिट कर दो। काँच की नली के आसपास की जगह से हवा आ-जा न सके, ऐसा इंतज़ाम करना होगा। इसके लिए मोमबत्ती जलाकर कुछ मोम की बूँदें नलियों के चारों ओर टपका दो।

②

अब जरा दूसरी नली, जिसमें गुब्बारा नहीं है, के बाहरी छोर से हवा खींचो। कैसे? भई मुँह से, और क्या! क्या हुआ? क्यों फूला गुब्बारा? तुमने तो हवा खींची थी, फूँकी नहीं थी, न।

यह मॉडल बनाकर तुम कहीं तैयार करके रख सकते हो, अपने दोस्तों से यह सवाल पूछ सकते हो, बाल-मेले में प्रदर्शित कर अन्य बच्चों को भी इस पर सोचने को कह सकते हो।

नटखट डबल कोन

ज्यादातर चीज़ों को अगर कोई ढलान वाली जगह मिले तो वो ऊपर से नीचे की ओर लुढ़कती हैं। पर यह नटखट डबल कोन है कि इसे अगर ढलान वाली जगह पर ऊपर रख दो तो यह वहीं बना रहता है। हाँ, नीचे से ऊपर की ओर आसानी से 'लुढ़कता' हुआ चढ़ जाता है। राज़ कुछ-कुछ ढलान वाली जगह और डबल कोन, दोनों में है। पर है क्या यह राज? अपन बनाकर देखें?

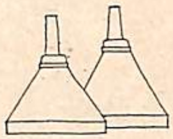

इस चित्र में दिखाए सामान को पहचान रहे हो? यही सब इक्ट्ठा करना है - दो प्लास्टिक की कीप (एक ही नाप की), मोटा मजबूत गत्ता, वाल्व ट्यूब या रबर का छल्ला और कैंची।

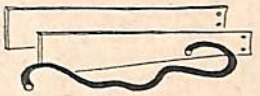

पहले डबल कोन बनाते हैं। दोनों कीप के गोलाकार हिस्सों को सटाकर उनके बीच वाल्व ट्यूब या रबर का छल्ला पिरो लो। ट्यूब के सिरों को खींचकर उनमें मोटी-मोटी गाँठ लगा दो ताकि कीप आपस में सटे रहें। गाँठ इतनी मोटी हों कि वे कीप की नली में घुस न पाएँ। यह बन गया डबल कोन।

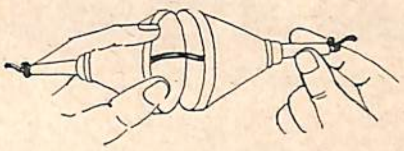

अब गत्ते में से चित्रानुसार दो एक-से टुकड़े काटो। ये टुकड़े एक छोर से कुछ चौड़े होंगे, दूसरे से पतले। दोनों टुकड़ों के पतले वाले छोरों को पास लाकर साथ में सिल दो। ढलान भी तैयार है। पहले इस पर एक पेंसिल लुढ़काओ। लुढ़की न ऊपर से नीचे। अब अपना डबल कोन लुढ़काकर देखो। क्या हुआ? और क्यों?

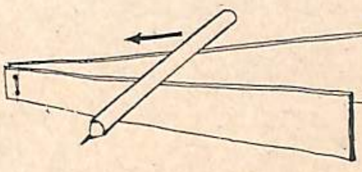

ये तो थी कुछ ऐसी चीज़ें जो एक या दो ही बना लो तो दसियों लोग इनका मजा ले सकते हैं। खुद बनाने का तो आनन्द ही और होता है, है ना। यानी कुछ ऐसी चीज़ें भी हों जो हर बच्चा खुद बना सके। बनाने का और उसे समझने का, दोनों का मज़ा ले सके। तो अब हम कुछ ऐसी चीजें भी ढूँढ निकालते हैं।

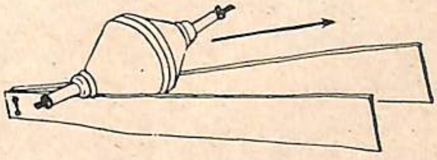

अनोखा बिगुल

जरूरी सामान है - प्लास्टिक की चौड़े मुँह वाली छोटी-सी डिब्बी, एक बड़ा गुब्बारा, दो पुराने प्लास्टिक के बॉलपेन की खोल (जिन्हें नली जैसा इस्तेमाल किया जा सके), धागा, मोमबत्ती, माचिस।

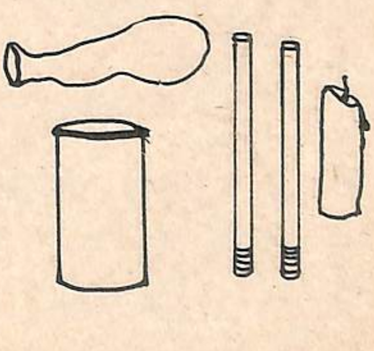

पहले डिब्बी का ढक्कन खोल डालो। अब उसके खुले मुँह पर गुब्बारे की एक परत तानकर धागे से कसकर बाँध दो (**चित्र-1**)। डिब्बी के पेंदे में लगभग पेन की गोलाई का एक छेद करो। इसमें से एक पेन अन्दर घुसा दो। इतना कि उसका अन्दर वाला हिस्सा गुब्बारे को छूता रहे (**चित्र-2**)।

अब डिब्बी की दीवार पर एक छेद करके दूसरा पेन उसमें घुसा दो (**चित्र-3**)। जहाँ से पेन डिब्बी में घुसाए हैं, वहाँ से हवा की आवाजाही रोकने के लिए मोम की कुछ बूँदें पेन के चारों ओर टपका दो।

अब ज़रा दीवार वाले पेन से हवा फूँको। कुछ आवाज़ आई? इस आवाज़ को बदल भी सकते हो। इसके लिए पेंदे में लगे पेन में थोड़ी-थोड़ी दूरी पर कुछ छेद बना लो। इन्हें एक-एक कर बनाते हुए बीच-बीच में ऊपर वाले पेन से फूँकते भी जाना। देखो, कैसे आवाज़ बदलती जाती है। जब तीन-चार छेद बन जाएँ तो उन पर उँगलियाँ रखकर चलाते हुए बजाओ। तुम्हारा बिगुल तैयार है, बाल-मेले के बच्चों की अगवानी करने के लिए।

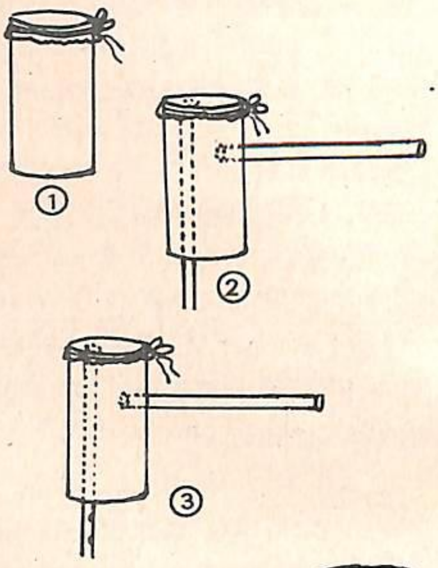

धुआँ

दो इंजेक्शन की बड़ी वाली शीशियाँ ले लो। एक-दो अगरबत्तियाँ और माचिस भी ले आओ।

इंजेक्शन की एक शीशी को उल्टा पकड़कर उसके मुँह के पास सुलगती हुई अगरबत्ती लाओ। (**चित्र-1**)। अगरबत्ती का धुआँ शीशी में इकट्ठा हो जाएगा। अब इस उल्टी शीशी को दूसरी इंजेक्शन की शीशी पर रख दो (**चित्र-2**)। देखो क्या होता है? कुछ देर बाद शीशियों को उल्टा कर दो। ऊपर वाली नीचे और नीचे वाली ऊपर। क्या हुआ? ऐसा कब तक होता रहेगा और क्यों?

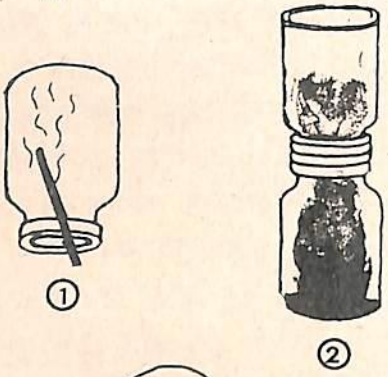

उचकतश्तरी

एक प्लास्टिक की डिब्बी का ढक्कन (छोटा-सा), खाली रीफिल, धागा, गुब्बारा, पानी भरी बाल्टी या तसला। यह सब सामान जुगाड़ना है तुम्हें, उचकतश्तरी बनाने के लिए।

बनाना शुरू करते हैं ढक्कन में एक पतला-सा छेद करके। छेद में रीफिल का एक टुकड़ा फँसा लो (**चित्र-1**)। रीफिल का टुकड़ा इतना बड़ा (या छोटा) हो कि उस पर से ढक्कन पर गुब्बारा चढ़ाया जा सके। अब गुब्बारे को रीफिल वाली ओर से ढक्कन पर चढ़ा लो ताकि रीफिल गुब्बारे के अन्दर छिप जाए (**चित्र-2**)। अब ढक्कन में से सीधे ही या रीफिल को मुँह में पकड़कर गुब्बारे में हवा भर लो। और ढक्कन के छेद पर ऊंगली रख लो ताकि हवा न निकल जाए। यह ध्यान रखना कि रीफिल ढक्कन की बाहरी सतह से बाहर न झाँके। सतह एकदम सपाट होनी चाहिए।

अब जल्दी से यह पूरा ताम-झाम तसले के पानी में तैरा दो (**चित्र-3**)। क्या हुआ? और क्यों भला?

अगर तुम्हारी तश्तरी पानी में उलट जाती है तो इसका मतलब वह हल्की है। भारी करने के लिए गुब्बारा उतारकर दो-तीन कंकड़-पत्थर ढक्कन पर रखकर फिर दोबारा बनाओ।

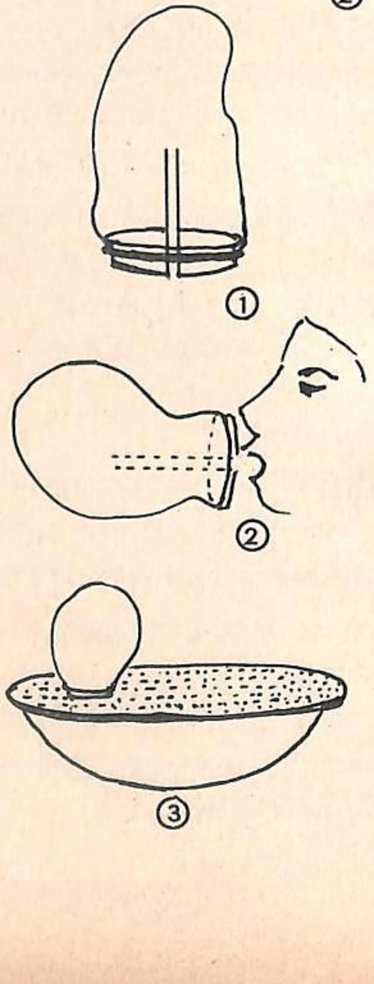

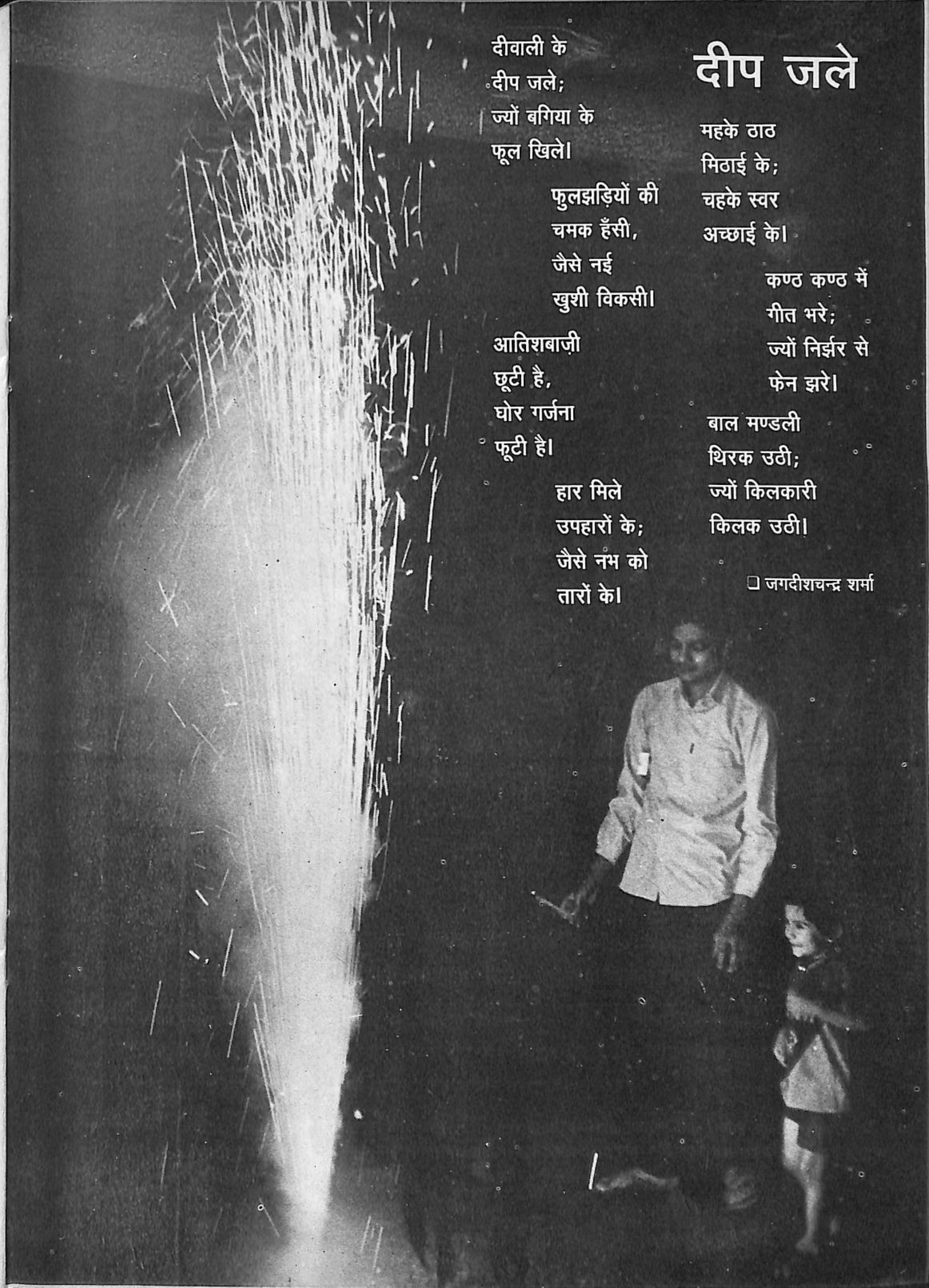

दीप जले

दीवाली के
दीप जले;
ज्यों बगिया के
फूल खिले।

फुलझड़ियों की
चमक हँसी,
जैसे नई
खुशी विकसी।

आतिशबाज़ी
छूटी है,
घोर गर्जना
फूटी है।

हार मिले
उपहारों के;
जैसे नभ को
तारों के।

महके ठाठ
मिठाई के;
चहके स्वर
अच्छाई के।

कण्ठ कण्ठ में
गीत भरे;
ज्यों निर्झर से
फेन झरे।

बाल मण्डली
थिरक उठी;
ज्यों किलकारी
किलक उठी।

❑ जगदीशचन्द्र शर्मा

कागज़ का खेल : ओरीगैमी

कागज तो खेल का एक मुख्य हिस्सा है ही पर इस खेल में तो सिर्फ़ कागज ही चाहिए। कागज को मोड़ कर कितनी तरह की आकृतियाँ बनाई जा सकती हैं यह तो तुम बनाकर ही जान सकते हो। इस खेल के लिए कागज वर्गाकार हो और हाथ की सफाई बस। हाथ की सफाई तो करते-करते आ ही जाती है। और वर्गाकार कागज के लिए एक आसान तरीका बता रहे हैं। तुममें से कई इस तरीक़े को जानते भी होंगे। इन चित्रों को देखकर कोशिश करो।

1. कागज के किसी भी एक कोने को मोड़ते हुए पास वाले किनारों को मिलाओ।
2. इस तरह।
3. अब नीचे बचे हुए हिस्से को मोड़कर फाड़ दो।
4. मुड़े हुए हिस्से को खोल लो। यह हो गया वर्गाकार कागज।

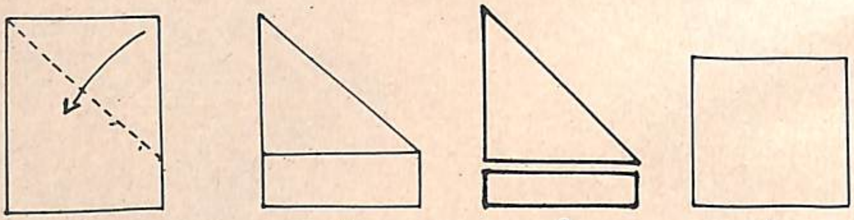

1 2 3 4

सजावटी लटकना

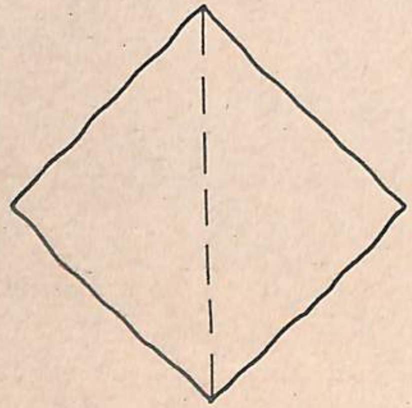

1. एक वर्गाकार कागज़ लो। चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ लो। मोड़ को अच्छी तरह दबाकर वापस खोल लो।

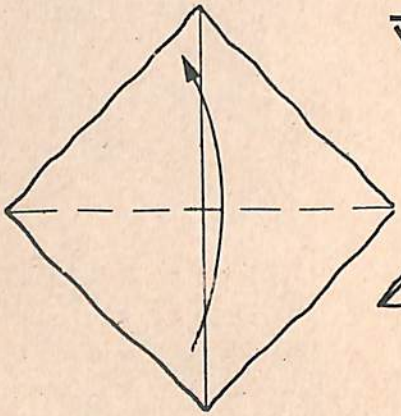

2. इस चित्र में दिखाई दें रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ लो।

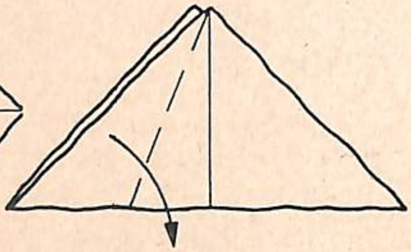

3. अब इस चित्र में दिखाई दे रही आकृति तुम्हारे पास है। इस चित्र में जो टूटी रेखा दिखाई दे रही है, उस पर से तीर की दिशा में मोड़ लो।

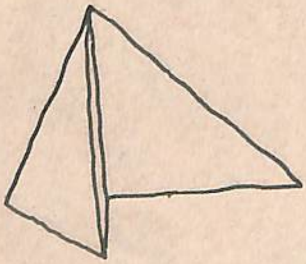

4. ऐसी आकृति मिलेगी।

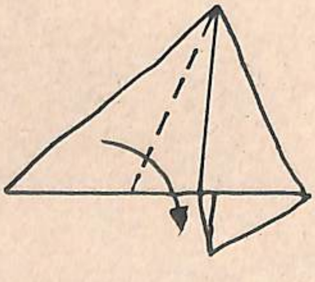

5. आकृति को पलट लो। फिर चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ लो।

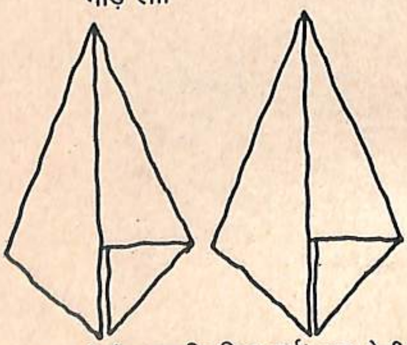

6. ऐसी आकृति मिल गई। अब ऐसी एक और आकृति तैयार कर लो।

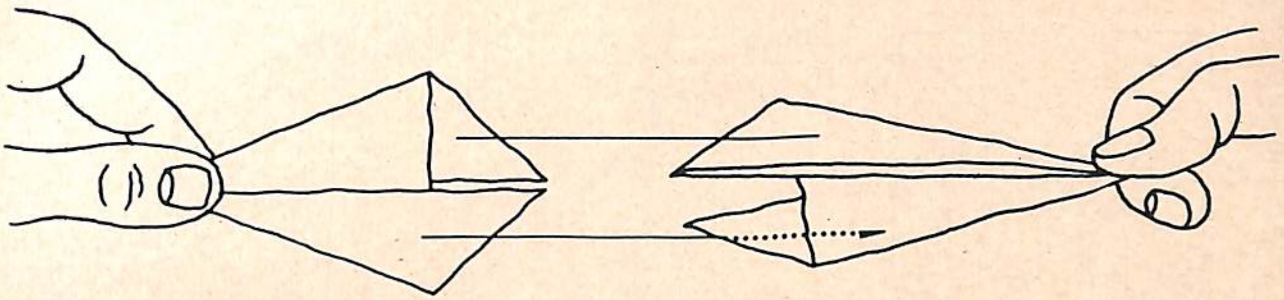

7 अब दोनों आकृतियों को चित्र में दिखाए तरीक़े से एक के अन्दर दूसरे को घुसा दो।

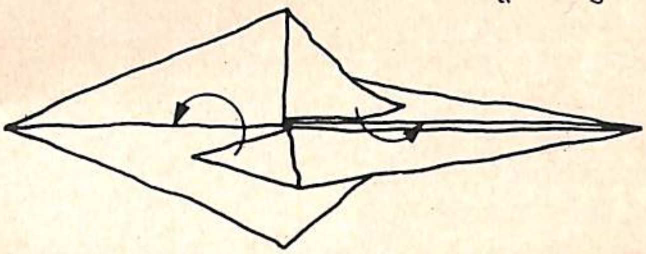

8. इस तरह कि दोनों एक-दूसरे से जुड़े रहें। थोड़ी कोशिश तुम खुद भी तो करो।

9. यह एक सजावटी आकृति तैयार हो गई। इसी तरह की और आकृतियाँ बनाकर गुच्छे में लटका सकते हो।

मछली

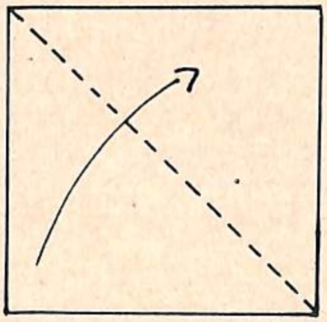

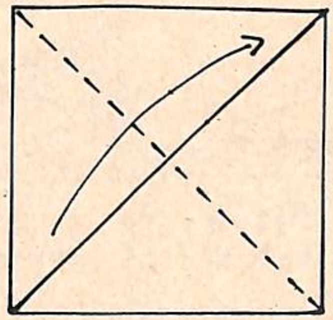

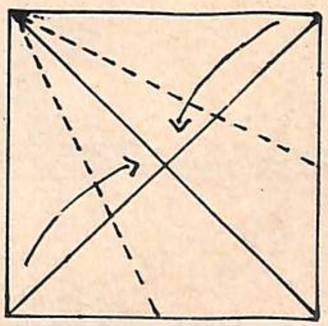

1. एक वर्गाकार कागज लो। चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ लो। मोड़ पक्का करके वापस खोल लो।

2. अब इस चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ बना कर, मोड़ पक्का करके वापस खोल लो।

3. इस चित्र में दिखाई गई सीधी रेखाओं का मतलब यह है कि तुम्हारे कागज में ऐसे मोड़ के निशान हैं। अब फिर वही, चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ लो। मोड़ पक्के करके वापस खोल लो

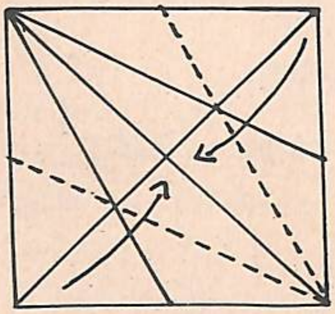

4. एक बार फिर चित्र में दिखाई गई टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ लो। और फिर वापस खोल लो।

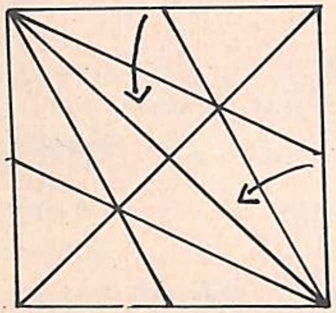

5. अब पहले दाहिनी ओर के हिस्से में बने निशानों के हिसाब से कागज़ मोड़ना है। इस चित्र में दिखाई दे रहे तीरों की दिशा में पहले बनाए हुए मोड़ों के निशान पर से मोड़ो। इस तरह मोड़ने से बीच में एक छोटी तिकोन-सी आकृति ऊपर की ओर उठ जाएगी।

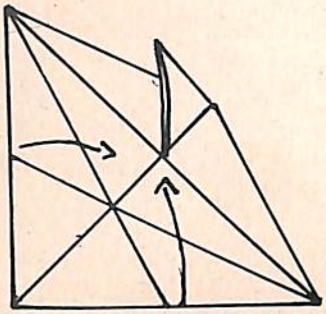

6. इस तरह की आकृति अब तुम्हारे पास है। अब दूसरी ओर यानी बाईं ओर के हिस्से को भी इसी तरह मोड़ो।

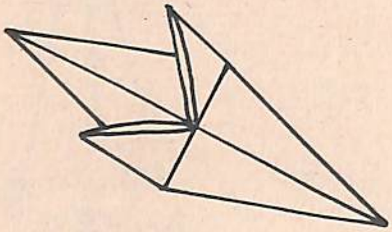

7. ऐसी आकृति मिलेगी। इस आकृति को पलट लो।

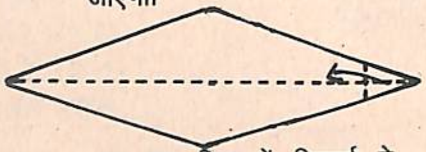

8. अब इस चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ लो। इसके बाद बीच की रेखा से पूरी आकृति को आधा करके मोड़ लो।

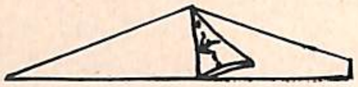

9. इस तरह की आकृति मिलेगी। अब आकृति के दोनों तरफ निकले छोटे तिकोनों को मोड़ लो। इस चित्र में एक तरफ के तिकोन पर टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ने के बारे में दिखाया है।

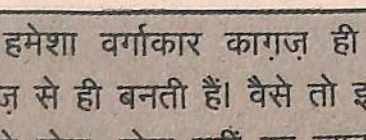

10. अब इस चित्र में दिखाई गई टूटी रेखा पर से आकृति को तीर की दिशा में मोड़ लो।

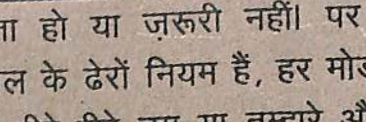

11. बस आगे आँख बना लो। मछली बनी कि नहीं।

इस खेल में हमेशा वर्गाकार कागज़ ही लगता हो या ज़रूरी नहीं। पर ज़्यादातर चीज़ें वर्गाकार कागज़ से ही बनती हैं। वैसे तो इस खेल के ढेरों नियम हैं, हर मोड़ का अलग नाम है, पर फिर वो खेल, खेल नहीं रह जाता। हाँ धीरे-धीरे तुम या तुम्हारे और दोस्त भी इन नियमों के बारे में जान लें तो कोई बुराई नहीं। पर शुरू में छूट होनी चाहिए। यहाँ हम एक-दो चीजें बनाना बताएँगे। बाक़ी तुम आपस में पूछो और चकमक के पुराने अंक मिल सकें तो उनमें देख लो।

बिंदु
• साहू
हमारे आनंद अंकल बड़े कमाल के जादूगर हैं।
अच्छा!!
एक बार उन्होंने एक नींबू को चाकू से काटा। तो जानते हो नींबू से क्या निकला?
रस निकला होगा और क्या निकलेगा!
रस नहीं... खून निकला!..खून!
क्यों? खून क्यों निकला?
यह एक वैज्ञानिक प्रयोग था। पर वो सच्ची का खून नहीं था। फिर मैंने भी यह प्रयोग घर पर किया।
तो क्या सचमुच खून निकला!!
हां, सचमुच खून निकला। जानते हो, खून क्यों निकला?
क्यों निकला?
उंगली के कट जाने के कारण।

माथापच्ची

(1)

फेंकू से पूछा गया, 'तुम्हारे पास कितनी गाय हैं?' उसने कहा, 'कुल संख्या का चौथा भाग, पाँचवाँ भाग और छठा भाग जोड़ा जाए तो योग 37 होगा। तुम ही बूझ लो।'

(2)

इस 20 से.मी. लम्बी और 2 से.मी. चौड़ी कागज की पट्टी में चार जगहों पर चीरा लग गया है। इसे अगर दोनों छोरों से पकड़कर खींचें तो यह कितने टुकड़ों में बँट जाएगी?

(3)

शब्बो के दादाजी पढ़ते समय मोटे-मोटे काँच वाला चश्मा लगाते हैं। उन्हें अक्षर 3 गुना बड़े दिखाई देते हैं। एक दिन दादाजी शब्बो को ज्यामिति पढ़ाने बैठे। बताओ किताब में बना 5° का कोण उन्हें कितने अंश का दिखेगा?

(4)

इन वाक्यों में कुछ अनावश्यक शब्द हैं। उन्हें ढूँढकर अलग करो-

1) रेखा, बगीचे से दो ताजे नीबू तोड़ ला।
2) अरे! रस में इतनी सारी ठण्डी बर्फ क्यों डाल दी?
3) पम्मी, बाजार से हरा धनिया पत्ती भी ले आना।
4) एक पीला पका पपीता काट लो।
5) रामचन्द्रन एक भरोसेमन्द व्यक्ति हैं।

(5)

तुमने ट्रैक्टर के पहिए तो देखे होंगे। पीछे के पहिए खूब बड़े-बड़े और आगे के कुछ छोटे। सोचकर बताओ कि इनमें से कौन-से पहिए ज्यादा जल्दी घिस जाते हैं और क्यों?

(6)

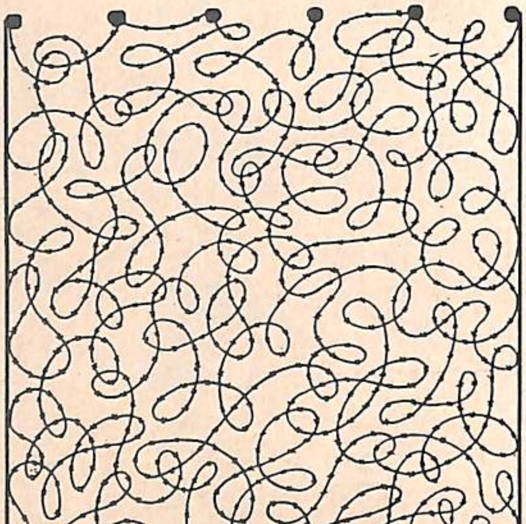

एक दिन तोत्तोचान बाड़ों के नीचे से जाते हुए अपनी दोस्त से शर्त लगा बैठी कि वह सामने फैले उलझे हुए तारों के भी पार जा सकती है। दोस्त ताफाँग ने रियायत बरतते हुए कहा कि वह तारों को सिर्फ़ 5 जगह काटकर अपना काम कुछ आसान बना सकती है।

तोत्तोचान तो ठहरी इन मामलों में अनुभवी। उसने झट एक ऐसा रास्ता खोज निकाला जिससे वह सिर्फ़ पाँच कट लगाकर ही फैले हुए तारों को पार कर गई। क्या तुम भी वह रास्ता ढूँढ सकते हो?

(7)

जुडवाँ	सीखती	का	नेहा	और	था।	मज़ा
बड़ी	कि	दोनो	थी।	चित्रकारी	ऐसा	उसकी
चौथी	बनाए	नित्या	थीं	और	बड़ी	हो
नृत्य	थीं।	में	और	नेहा	को	जाए।
आ	कक्षा	शौक	पढ़ती	बहुत	छोटी।	नेहा
करे	बहनें	थी।	छोटी	कभी	नित्या	न?
उनमें	दो	अगर	नित्या।	तो	नृत्य	तस्वीर

चकमक के पाठक इस तरह की पहेली पहले भी हल कर चुके हैं। यहाँ इस चौखानों वाले डिब्बे में बहुत से शब्द बिखरे पड़े हैं। सीधे-सीधे पढ़ते जाओ तो वे बेसिर-पैर के लगते हैं। पर इन शब्दों को चुनकर जमाने से सारे शब्दों का इस्तेमाल करके एक छोटी-सी कहानी बनाई जा सकती है। कोशिश करोगे बनाने की? तुम्हारी सुविधा के लिए वाक्यों के अन्त वाले शब्दों के साथ विराम चिन्ह (।) भी लगाया गया है।

वर्ग पहेली-40

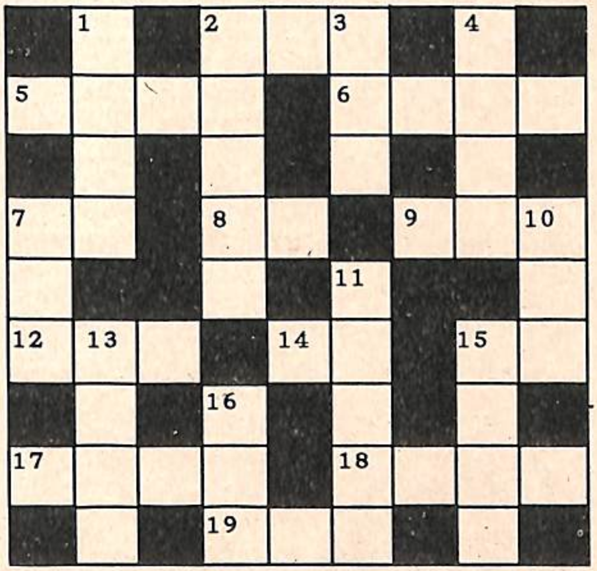

संकेत : बाएँ से दाएँ

2. भोर (3)
5. तनिक प्रकृति की काट-छाँट में रोज़-रोज़ (4)
6. तनी वन की उलटफेर में नया भी, मक्खन भी (4)
7. दिन भी, हमला भी (2)
8. जिसे तेल पिलाकर लड़ाई के लिए तैयार किया जाता है (2)
9. लगातार (3)
12. ऐसी घटना जिसमें मन या मस्तिष्क को चोट पहुँचे (3)
14. चौपायों के होते हैं (2)
15. भीगा हुआ (2)
17. संदेश लाने-ले जाने वाला (4)
18. स्वभाव बताने वाला एक भाव (4)
19. बादल (3)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. 'तवा पर' है नाव खेने का साधन (4)
2. ताकू में अगर तिल और सिरकटा विप्र मिले तो विरोध तो होगा ही (5)
3. पुत्र (3)
4. पानी के तप में है एक मशहूर युद्ध स्थल (4)
7. उत्तराधिकारी (3)
10, तेज .... (3)
11. मोहनदास किसके पुत्र थे (5)
13. रगड़ कर धक्का देना (4)
15. काल के तह में शोर भी है, खलबली भी (4)
16. उजाड़ होना (3)

❑ राजेश कुमार पाटिल, बोरिद (पाटन), दुर्ग द्वारा बनाई गई वर्ग पहेली पर आधारित

सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक तीन माह तक उपहार में भेजी जाएगी। हल के लिए वर्ग-पहेली की जाली को चकमक से काटकर न भेजें। बल्कि उसमें जो शब्द आने वाले हों उन्हें संकेत के ही नम्बर देकर लिख दें। वर्ग पहेली 40 का हल फरवरी, 95 अंक में देखें।

कुछ पास की, कुछ दूर की

बताओ कल दोपहर को तुमने खाने में क्या खाया था? क्या कहा? चावल, दाल और पालक की भाजी। दाल कौन-सी थी? अच्छा तूअर की। चलो अब यह देखते हैं कि यह सब तुम तक पहुँचा कहाँ से और कैसे?

चावल आया छत्तीसगढ़ से, तूअर उत्तर प्रदेश से (या तुम्हारे आसपास के किसी गाँव से भी हो सकती है), और पालक के बारे में तो तुम खुद ही बताओ। इसके अलावा दाल और भाजी में डली हल्दी, मिर्च, नमक भी कहीं-न-कहीं से तो आया ही होगा। कुछ आस-पास से, कुछ दूर-दराज से। और इकट्ठा हो गया एक दिन तुम्हारी थाली में। सो तुम्हारा वास्ता इन सारी जगहों से है, यह तो मानते हो न। तो कभी-कभी कुछ खेलों के ज़रिए अगर इन जगहों में घूम आया जाए तो कैसा रहे?

वैसे सफ़र सिर्फ़ जगह के बदलाव से ही थोड़े होता है। समय में भी तो सफ़र किया जा सकता है। दूरी तो स्थानों के बीच भी होती है और अलग-अलग काल के बीच भी। लाखों साल पहले के आदिमानव की जिन्दगी में झाँकना हो या आज की पंचायत में होती कार्यवाही में, मर्जी तुम्हारी है। पर यह सब ताका-झाँकी अगर खेलों के जरिए हो, मजे-मजे में, तो कैसा रहे? यहाँ ऐसे ही कुछ खेल खेलेंगे। पर इस तरह के और कई खेल तुम खुद सोचकर बना और खेल सकते हो। अपनी कल्पना के घोड़े दौड़ाओ और जो कुछ नया सोचो, वह हमें लिख भेजो।

बूझो जगह का नाम

यह खेल अपने ही प्रदेश - मध्यप्रदेश के बारे में। वैसे दूसरे प्रदेश के हमारे दोस्त इसे अपने प्रदेश के साथ आज़मा सकते हैं। और खेल-खेलकर जब यूँ लगने लगे कि हम अपने प्रदेश की सीमा के अन्दर काफ़ी घूम लिए हैं, तो सीमा लाँघकर दूसरे प्रदेशों में भी जाया जा सकता है।

बहरहाल खेल के लिए जरूरत होगी अपने प्रदेश के दो बड़े नक्शों की। और भाग लेने वाले सभी खिलाड़ियों को दो टोलियों में बँट जाना होगा। अब दोनों टोलियाँ एक-एक नक्शा ले लें। असली खेल शुरू करने से पहले सारे खिलाड़ी नक्शे को अच्छे से देख लें। नक्शे में तुम्हें अपने दोस्तों-रिश्तेदारों के गाँवों, शहर आदि के नाम ढूँढने हैं। यह भी देखने की कोशिश करो कि उन जगहों तक कैसे पहुँचा जा सकता है - रेल से, बस से या...।

जब नक्शों से काफ़ी परिचय हो जाए तो खेल शुरू करो। एक टोली के खिलाड़ी नक्शे में देखकर आपस में कोई जगह (ज़िला, तहसील, गाँव या शहर) सोच लें। दूसरी टोली को उस जगह को बूझना है। इसके लिए दूसरी टोली के खिलाड़ी आपस में सलाह करके ऐसे प्रश्न पूछें जिनके उत्तर केवल 'हाँ' या 'नहीं' में हों।

मान लो खेल मध्यप्रदेश के नक्शे से हो रहा है और पहली टोली ने जगह सोची 'रतलाम'। तो सवाल-जवाब कुछ इस तरह से होंगे-

दूसरी टोली - क्या वह जिला है?

चित्र : शिवेन्द्र पाँडिया

पहली टोली - हाँ।

दूसरी टोली - वह ज़िला मध्यप्रदेश के किस भाग में है?

पहली टोली - (चुप रहेगी क्योंकि इसका उत्तर 'हाँ' या 'नहीं' में नहीं दिया जा सकता।)

दूसरी टोली - क्या वह दक्षिणी म.प्र. में है?

पहली टोली - नहीं।

दूसरी टोली - पूर्वी म.प्र. में?

पहली टोली - नहीं।

दूसरी टोली - कहीं पश्चिमी म.प्र. में तो नहीं?

पहली टोली - हाँ।

दूसरी टोली - क्या वह झाबुआ है?

पहली टोली - नहीं।

इस तरह दूसरी टोली कुछ और सवाल करके या पश्चिमी म.प्र. के कुछ और ज़िलों के नाम लेकर सही जवाब यानी रतलाम तक पहुँच सकती है।

अगला सवाल बूझने की बारी पहली टोली की होगी, जब दूसरी टोली उनके बूझने के लिए एक जगह चुनेगी।

जब यह खेल खेलो तो यह गिनते जाओ कि सही-सही गाँव, तहसील, शहर....का नाम बूझने से पहले किस टोली ने कितने सवाल पूछे। पूछे गए सवालों की संख्या ही इस टोली के अंक होंगे। अन्त में जिस टोली के कम अंक होंगे वह ही जीतेगी।

नक्शा बनाओ

यह तो थी पूरे प्रदेश की बात। अब यहाँ से चलकर अपने ही गाँव के गली मोहल्ले में आ जाते हैं। इसके लिए तुम्हें सिर्फ़ एक कागज़ और पेंसिल की ज़रूरत होगी। और यह खेल तो हर कोई अपने तई ही खेलकर भी मजा ले सकता है।

इस खेल के लिए सभी गोले में बैठ जाएँ। कोई एक उनके बीच कागज बाँट दे। पेंसिल तो सबके पास होगी ही।

करना यह है कि जिस रास्ते से तुम रोज़ (या अधिकतर) आते-जाते हो, उसका नक्शा इस कागज़ पर बनाना है। साथ ही, रास्ते में पड़ने वाली मुख्य चीज़ें (जैसे कुआँ, तालाब, कोई अकेला पेड़,....) या जगह (मंदिर, मस्जिद, अस्पताल, बाग,...) हो तो वह भी नक्शे में दिखाओ।

इतिहास में ताकाझाँकी

जगह-जगह घूमकर अगर कुछ थक गए हो तो चित्र देखकर आँखों को आराम दे लो। इसके लिए पहले से यह तैयारी करनी पड़ेगी कि अलग-अलग समय के कुछ चित्र जुगाड़ लो। अलग-अलग समय से मतलब कोई मुग़लकाल का, कोई अंग्रेज़ों के समय का या कोई आदिम समय का। इसके लिए कुछ किताबें, मैगज़ीन, कैलेण्डर वग़ैरह पहले से सहेजकर रखे जा सकते हैं। खेल खेलते समय तो चित्र के साथ सिर्फ़ कागज़-पेंसिल ही चाहिए। चित्र ऐसे हों जिनमें बारीकी से देखने पर कई चीज़ें ढूँढी जा सकें।

सारे खिलाड़ी तीन या चार के समूहों में बैठ जाएँ। उनमें हरेक टोली को एक चित्र, कागज और पेंसिल दे दो। टोली के सारे लोग अपने चित्र को अच्छे से देखें और जो कुछ उसमें होता हुआ दिखता है, वह कागज़ पर लिखें।

यहाँ उदाहरण के लिए एक चित्र दे रहे हैं। इसमें से क्या तुम मुगलकाल के जीवन के, रहन-सहन के बारे में कुछ लिख पाते हो?

माह अक्टूबर, 94 अंक में प्रकाशित लेख 'परिचय, वर्ग-पहेली से' में प्रकाशित वर्ग-पहेलियों के हल।

एक

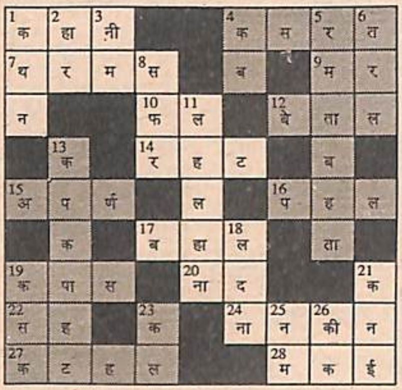

दो

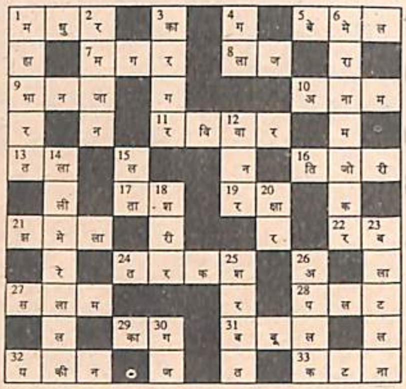

तीन

सरल पहेली

चित्र वर्ग पहेली

चार

पाँच

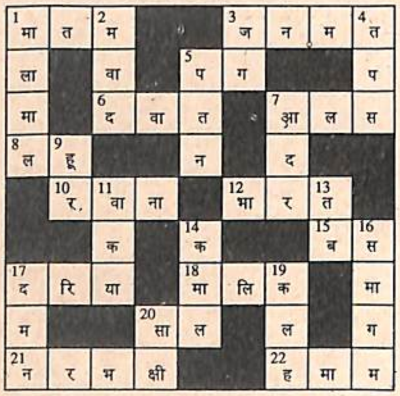

अंक अक्षर पहेली

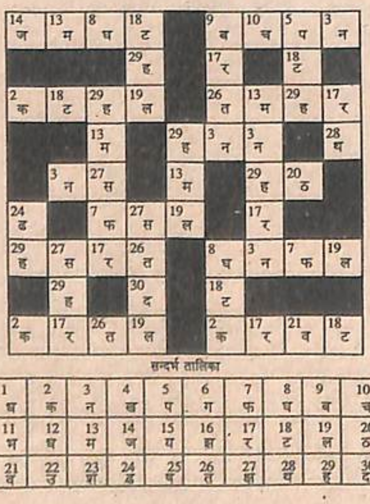

वृक्ष पहेली

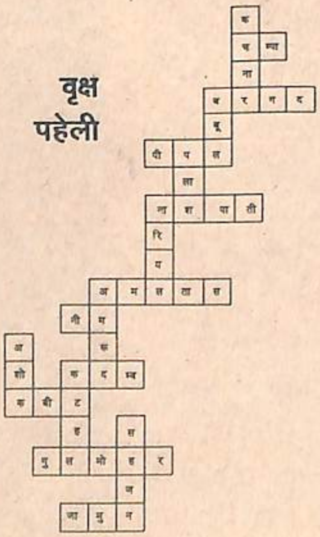

छह

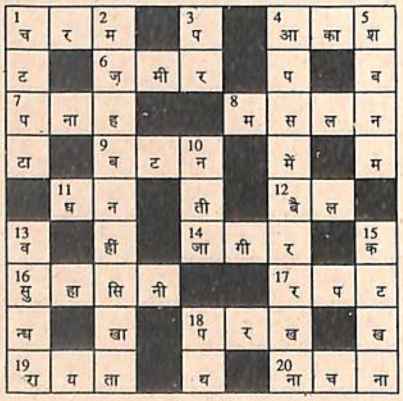

माथा पच्ची -हल : अक्टूबर 94, अंक के

2. सायकिल चलाते समय तनु की गति चार गुना अधिक थी।

5.

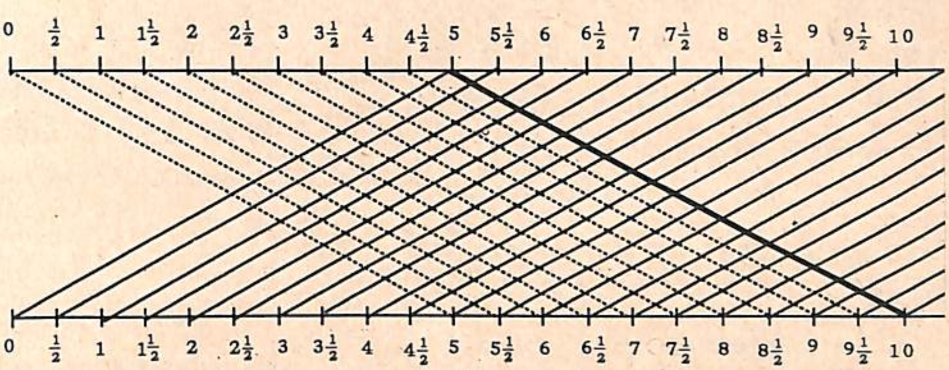

3. इन्दौर से आने वाली प्रत्येक बस को भोपाल से आने वाली ग्यारह बस मिलेंगी। यहाँ ग्राफ बनाकर भी बताया गया है।

6.

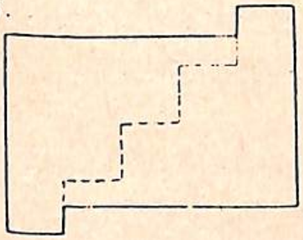

9. गुलाबो दादी के गाँव दस बजकर दस मिनट पर पहुँची।

7. पहले से तीसरे स्टेशन की दूरी पहले से छठवें स्टेशन की दूरी की तुलना में 2/5 हिस्सा होगी।

8. लिफ्ट त्वरण से ऊपर चढ़ती है यानि उसकी गति लगातार बढ़ती जाती है, लिफ्टमेन इसी का फायदा उठाकर लोगों को ठगता है। क्योंकि कमानीतुला जितना वज़न दिखाती है असल में सामान उतना नहीं होता है।

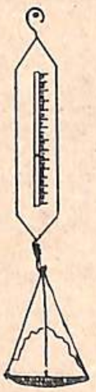

वर्ग पहेली- 38 : हल

1 स	2 ब	3 सा	■	■	4 र	त	5 ला	म
6 क	स	र	7 त	■	फू	■	ल	■
ल	■	■	8 ह	9 द	■	10 प्र	ब	ल
■	11 गु	■	12 त	कि	या	■	हा	■
13 मुं	द	री	■	या	■	14 वि	दु	र
■	ड़ी	■	15 जु	नू	16 ब	■	र	■
17 अ	का	ल	■	18 सी	रा	■	■	19 कै
■	ला	■	20 ता	■	21 ह	22 मा	23 क	त
24 म	ल	म	ल	■	■	25 या	च	न

वर्ग पहेली - 38 का सिर्फ़ एक सर्वशुद्ध हल मिला है- प्रवीण नाग, जयपुर, राजस्थान से। उन्हें तीन माह तक चकमक उपहार में भेजी जाएगी।

गूलर

भारत की आजादी के लिए कई आन्दोलन हुए। ऐसा ही एक आन्दोलन था होमरूल (स्वराज) आन्दोलन। इस दौर की एक मजेदार घटना है। मदनमोहन मालवीय जगह-जगह सभाएँ करते थे और उसमें होमरूल की माँग रखते थे। तब एक अंग्रेज़ पादरी ने जो उर्दू जानता था, मालवीय जी पर एक फब्ती कसी-

कहते हैं मालवीय जी, हम होमरूल लेंगे।
दीवाना हो गए है, गूलर का फूल लेंगे।।

इसके जवाब में एक भारतीय कवि ने लिखा-

जब होमरूल होगा, बरबैंक जन्म लेंगे।
जी हाँ जनाब तब तो, गूलर भी फूल देंगे।।

मतलब यह कि 'गूलर का फूल' किसी अनहोनी-सी चीज़ की तरह माना गया। होमरूल को अनहोनी बात समझकर पादरी ने मजाक उड़ाते हुए कहा कि मालवीय जी गूलर का फूल चाहते हैं। बरबैंक वनस्पति शास्त्र का एक वैज्ञानिक था। भारतीय कवि के कहने का मतलब था कि जब हमारा अपना शासन होगा तब बरबैंक जैसे वैज्ञानिक जन्म लेंगे और तब वो गूलर में से भी फूल पैदा कर लेंगे।

यह कहानी सुनाने के पीछे बात यह थी कि गूलर में फूल नहीं होता ऐसा माना जाता है। जबकि यह धारणा गलत है। यह पेड़ उस जाति का है जिसमें फूल होते तो हैं, पर अन्य पेड़ों के फूलों की तरह दिखाई नहीं देते। वास्तव में हम जिसे फल के रूप में देखते हैं फूल उसके अन्दर होते हैं। बड़, पीपल, अंजीर, रबर आदि इसी जाति के पेड़ हैं।

गूलर का पेड़ भारत में लगभग हर जगह पाया जाता है। मझौले कद का यह पेड़ गर्म जलवायु वाले इलाकों में पैदा होता है। इसका पत्ता लम्बा, अण्डाकार, नुकीला और गहरे हरे रंग का होता है। गूलर का फल शाखों पर ही लगा हुआ दिखाई देता है। फल छोटा गोल होता है। कच्चा फल हरे रंग का होता है, पकने पर लाल हो जाता है। गूलर का फल वैसे तो साल में कई बार फलता है लेकिन मार्च से जुलाई तक इनकी मात्रा अधिक होती है।

गूलर के पेड़ की लकड़ी स्लेटी या सफ़ेद रंग की मुलायम और हल्की होती है। गूलर के पेड़ पर ढेरों पक्षियों का बसेरा रहता है। इसके साथ ही कई तरह के कीड़े भी इस पेड़ पर पलते हैं। यहाँ तक कि पके हुए फल में भी सैकड़ों कीड़े रहते हैं।

गूलर के पेड़ का उपयोग कई कामों में होता है। गूलर के पेड़ के तने में से एक तरह का दूध जैसा पदार्थ निकलता है। सूखने पर ये पीला पड़ जाता है। इससे कई तरह की दवाएँ बनाई जाती हैं। इस पेड़ की लकड़ी सस्ते फर्नीचर बनाने में काम आती है क्योंकि यह लकड़ी ज्यादा टिकाऊ नहीं होती। अगर लकड़ी को पानी में रखा जाए तो फिर इसका टिकाऊपन थोड़ा बढ़ जाता है। इसकी छाल और जड़ से भी कई दवाएँ बनाई जाती हैं। गूलर का फल खाया जाता है– कच्चा भी और पका भी। इसके फल से तरकारी भी बनाते हैं।

□□

मनुष्य महाबली कैसे बना!

मनुष्य जंगल से जूझता है

पुराने टुन्ड्रा की जगह जो जंगल उगे, वे हमारे आजकल के जंगलों जैसे बिलकुल नहीं थे। यह बिलकुल नदियों और झीलों के तट तक और कहीं-कहीं तो ऐन समुद्र तक उगे हुए विशाल वृक्षों और झाड़-झंखाड़ की एक दीवार थी, जो हज़ारों किलोमीटर तक चली गई थी।

इस विचित्र और नई दुनिया में प्रागैतिहासिक मानव का जीवन खेल नहीं था। जंगल उसे अपने खुरदुरे पंजों से दबाकर घोटे डालता था, इसने उसके लिए साँस लेने और चलने-फिरने भर को भी जगह न छोड़ी थी। उसे पेड़ों को काटते हुए, ज़मीन के छोटे-छोटे टुकड़ों को साफ़ करते हुए जंगल से लगातार जूझना पड़ता था।

टुन्ड्रा या स्तेपी में प्रागैतिहासिक मनुष्य को शिविर-स्थल के लिए अच्छा ठिकाना ढूँढने में कोई परेशानी न होती थी। हर कहीं काफ़ी जगह थी। लेकिन जंगल में पहले उसे प्रकृति से खुली ज़मीन का यह टुकड़ा छीनना पड़ता था।

यहाँ ज़मीन का चप्पा-चप्पा पेड़ों और घने झाड़-झंखाड़ से भरा हुआ था। उसे जंगल पर दुश्मन के क़िले की तरह हमला करना पड़ता था।

लेकिन हथियारों के बिना कोई लड़ नहीं सकता। पेड़ों को काटने के लिए उसे कुल्हाड़ी चाहिए थी। और इसलिए उसने एक लम्बे हत्थे में एक भारी तिकोना चकमक लगाया।

और जंगलों में, जहाँ पहले कठफोड़वा ही पेड़ों पर हमला करता था, एक नई आवाज़ गूँजने लगी। यह नई आवाज़ पशुओं और पक्षियों को डराती थी। यह पहले पेड़ों पर गिरने वाली पहली कुल्हाड़ियों की आवाज़ थी।

तेज़ चकमक पेड़ की देह में गहरा घुस जाता। घाव से गाढ़ा रस टपकता। लकड़हारे के पैरों पर गिरते-गिरते पेड़ चरचराता और कराहता।

दिन-प्रति-दिन लोग कुल्हाड़े चलाते हुए जंगल की दुनिया में अपने लिए और जगह बनाने के लिए जुटे रहे। जगह साफ़ कर लेने के बाद वे ठूँठों और झाड़-झंखाड़ को जला डालते।

डालों को काट देने के बाद वे पेड़ के एक सिरे को नुकीला

करते और पत्थर के हथौड़े की चोटों से उसे जमीन में ठोंक देते। इस खम्भे के बराबर वे एक लकीर में एक, दूसरा और फिर तीसरा और फिर चौथा खम्भा भी ठोंक देते। जल्दी ही वे एक दीवार तैयार कर लेते, जिसे वे खम्भों के भीतर-बाहर डालियों की बुनाई से और मज़बूत कर लेते। कुछ समय बाद जंगल के बीच में लकड़ी का एक झोपड़ा उठ खड़ा होता, जो स्वयं एक छोटे जंगल जैसा दिखाई देता था।

अगर प्रागैतिहासिक मनुष्य के लिए जंगल की दुनिया में अपने लिए जगह बनाना मुश्किल था, तो वहाँ भोजन पाना तो और भी कठिन था।

खुले मैदानों में वह झुण्ड में रहने वाले जानवरों का शिकार किया करता था। वहाँ झुण्ड को दूर से ही देख लेना आसान था, क्योंकि छोटे से टीले की चोटी से कई किलोमीटर दूर तक देखा जा सकता था।

लेकिन जंगल में बात एकदम दूसरी थी। यद्यपि जंगल के घर में निवासी भरे पड़े थे, उनमें से नज़र कोई भी नहीं आते थे। वे वन की सभी मंजिलों को अपनी आवाजों, सरसराहट और चहचहाहट से भर देते थे, लेकिन उन्हें पकड़ पाना बहुत कठिन था।

कोई चीज़ पैरों के नीचे से सरसराती निकल जाती या निचली पत्तियों को आगे-पीछे झुलाती सर्र-सर्र ऊपर से उड़कर निकल जाती।

प्रागैतिहासिक मनुष्य इन सभी सरसराहटों और गंधों को कैसे अलग करता, पेड़ों के चटकीले तनों में जानवरों की चटकीली चित्तियाँ कैसे देखता?

जंगल के हर पक्षी और पशु का अपना रक्षात्मक रंग था। पक्षियों के पंख पेड़ों के चित्तीदार तनों जैसे दिखाई देते थे। जंगल के हल्के अंधेरे में जानवरों की सुर्ख़-कत्थई खाल मरी हुई पत्तियों के रंग की ही नजर आती।

जानवर का पीछा करके उसे पकड़ पाना कठिन था। लेकिन कहीं वह पास आ जाता, तो शिकारी को उस पर अपना हथियार फेंकने का बस एक ही अवसर मिलता। उसका निशाना अचूक होना चाहिए था, नहीं तो जानवर झाड़ियों में गायब हो जाता।

तभी प्रागैतिहासिक शिकारी को अपने नेज़े की जगह तीव्रगामी और अचूक तीर को देनी पड़ी। हाथ में अपना धनुष लिए और कंधे पर अपना तरकश लटकाए वह झुरमुटों में जंगली सुअरों को मारता और दलदलों में बत्तखों और हंसों का शिकार करता चला जाता था।

हर शिकारी का एक वफ़ादार दोस्त था। उसके दोस्त के चार पंजे, बड़े-बड़े मुलायम कान और एक काली जिज्ञासा भरी नाक थी।

शिकार के समय यह चार पैरों वाला दोस्त जानवर को ढूँढने में उसकी सहायता करता। खाने के समय वह अपने मालिक के बराबर बैठता और उसकी आँखों में देखा करता, मानो पूछ रहा हो, "और मेरा हिस्सा।"

यही चौपाया दोस्त आदमी की हज़ारों वर्षों से सेवा करता आ रहा है। प्रागैतिहासिक मनुष्य का कुत्ता सम्भवतः उसके आवास की पहरेदारी करता था और शिकार में उसे सहायता देता था। प्रारम्भिक वन्य बस्तियों में रसोई का कूड़ा फेंकने के गड्ढे हुआ करते थे, जिनमें वैज्ञानिकों को जानवरों की हड्डियाँ मिली हैं, जिन पर कुत्ते के दाँतों के निशान हैं।

प्रागैतिहासिक मनुष्य कुत्ते को तभी ले लेता, जब वह पिल्ला ही होता और उसे अपना सहायक बनाने और जंगल में शिकार का पीछा करने के लिए तैयार करता। सहायक के चुनाव में उसने ग़लती नहीं की। इससे पहले कि वह जंगली सूअर के निशानों को देख पाता या बारहसिंघे के क़दमों की आहट को सुन भी पाता, उसका कुत्ता तन जाता था और जानवर की गंध पकड़ने के लिए अपनी नाक उठा देता था।

झाड़ियों में किस चीज़ की गंध थी? अभी-अभी यहाँ से कौन गुज़रा था? निशान पकड़ने के लिए दो या तीन सुड़कनें काफ़ी थीं। अब कुत्ता न कुछ सुनता था, न देखता था, वह अपने मुख्य कार्य में पूर्णतः लीन हो जाता था - जानवर को पकड़ने का काम - और जंगल में फुर्ती और तेजी के साथ भागता था। उसके मालिक को बस उसके पीछे जाना भर रहता था।

कुत्ते को पालतू बना लेने के बाद आदमी और भी शक्तिशाली हो गया। उसने कुत्ते की नाक से, जो उसकी अपनी नाक से कहीं तेज थी, अपना काम निकलवाया।

लेकिन आदमी ने कुत्ते की नाक को ही अपने काम में नहीं लिया। उसने उसकी चारों टाँगों का भी उपयोग किया। घोड़े को अपनी गाड़ी में जोतना शुरू करने के बहुत पहले कुत्ते आदमी के सामान और उसके परिवार को खींचने के काम में लाए जाते थे। मतलब यह कि कुत्ते शिकार में ही आदमी की सहायता नहीं करते थे, वे उसे ढोते भी थे। इस तरह आदमी के सबसे अच्छे दोस्त - उसके कुत्ते - से हमारा परिचय हुआ।

मनुष्य ने नदी किनारे घर बनाया

सभी प्रागैतिहासिक लोगों ने जंगल में ही अपने घर नहीं बनाए। ऐसे भी लोग थे, जिन्होंने घने जंगलों को छोड़ दिया और नदियों और झीलों के तटों पर बस गए।

वहाँ, पानी और जंगल के बीच की जमीन की पतली पट्टी पर उन्होंने अपने लकड़ी के झोपड़े बनाए। नदी के किनारे जंगल के मुक़ाबले जगह ज्यादा थी, मगर यहाँ रहना भी उतना ही मुश्किल था।

नदी एक अस्थिर पड़ोसिन थी। जब उसमें बाढ़ आती और वह किनारे पर चढ़ आती, तो वह अक़्सर मनुष्य द्वारा बनाई झोपड़ियों को बर्फ़ और मनुष्य के गाड़े हुए तनों सहित बहाकर ले जाती थी। बाढ़ से भागकर लोग सबसे पास के पेड़ों पर जा चढ़ते और चढ़ी हुई नदी के उतर जाने की प्रतीक्षा करते। जब नदी अपने तल पर लौट आती, तो वे तट पर अपनी झोपड़ी को फिर बनाना शुरू करते।

आरम्भ में हर बाढ़ उन्हें अचानक ही पकड़ लेती थी, लेकिन नदी के तौर-तरीक़ों का अध्ययन कर लेने के बाद वे उससे बाजी मारने में सफल हो गए।

उन्होंने कई पेड़ काटे और उनके तनों को बेड़े की तरह एक साथ बाँध दिया। बेड़े को उन्होंने नदी के तट पर रख दिया। इसके बाद लट्ठों की पहली तह पर उन्होंने एक तह और डाली। इस तरह तह-पर-तह डालकर उन्होंने एक ऊँचा मचान बना दिया। इसके बाद मचान पर उन्होंने अपनी झोपड़ियाँ बनाईं। अब उन्हें बाढ़ का डर नहीं था।

प्रागैतिहासिक मनुष्य ने नदी से जूझने में काफ़ी श्रम और समय लगाया। लेकिन नदी के तट पर बसने के लिए वह क्यों तैयार हुआ और वह पानी के पास क्यों रहना चाहता था? प्रागैतिहासिक मानव के लिए नदी का बड़ा आकर्षण उसकी मछलियाँ थीं।

शिकारी ने मछलीमार बनना कैसे सीखा? शिकारी रात भर में ही मछियारा नहीं बन गया होगा। इसलिए मछली पकड़ना सीखने के पहले वह मछली का शिकार करता होगा। और यही असल में हुआ भी। मछली मारने का पहला औजार एक काँटेदार बर्छा था, जो बहुत कुछ शिकार के भाले जैसा ही था। इसके बाद उसने मछली को अन्य साधनों से पकड़ना सीखा। वह पक्षियों को जाल से पकड़ना सीख ही चुका था। धीरे-धीरे लोग मछली पकड़ने के लिए भी जाल का इस्तेमाल करने लगे।

पुरातत्वविदों को खुदाई में कोंच और काँटेदार बर्छियाँ, मछली पकड़ने के जालों के पत्थर के लंगर और मछली पकड़ने के हड्डी के बने काँटे मिले हैं।

(अगले अंक में जारी)

'मनुष्य महाबली कैसे बना!' से साभार।

प्रस्तुति : राजेश उत्साही

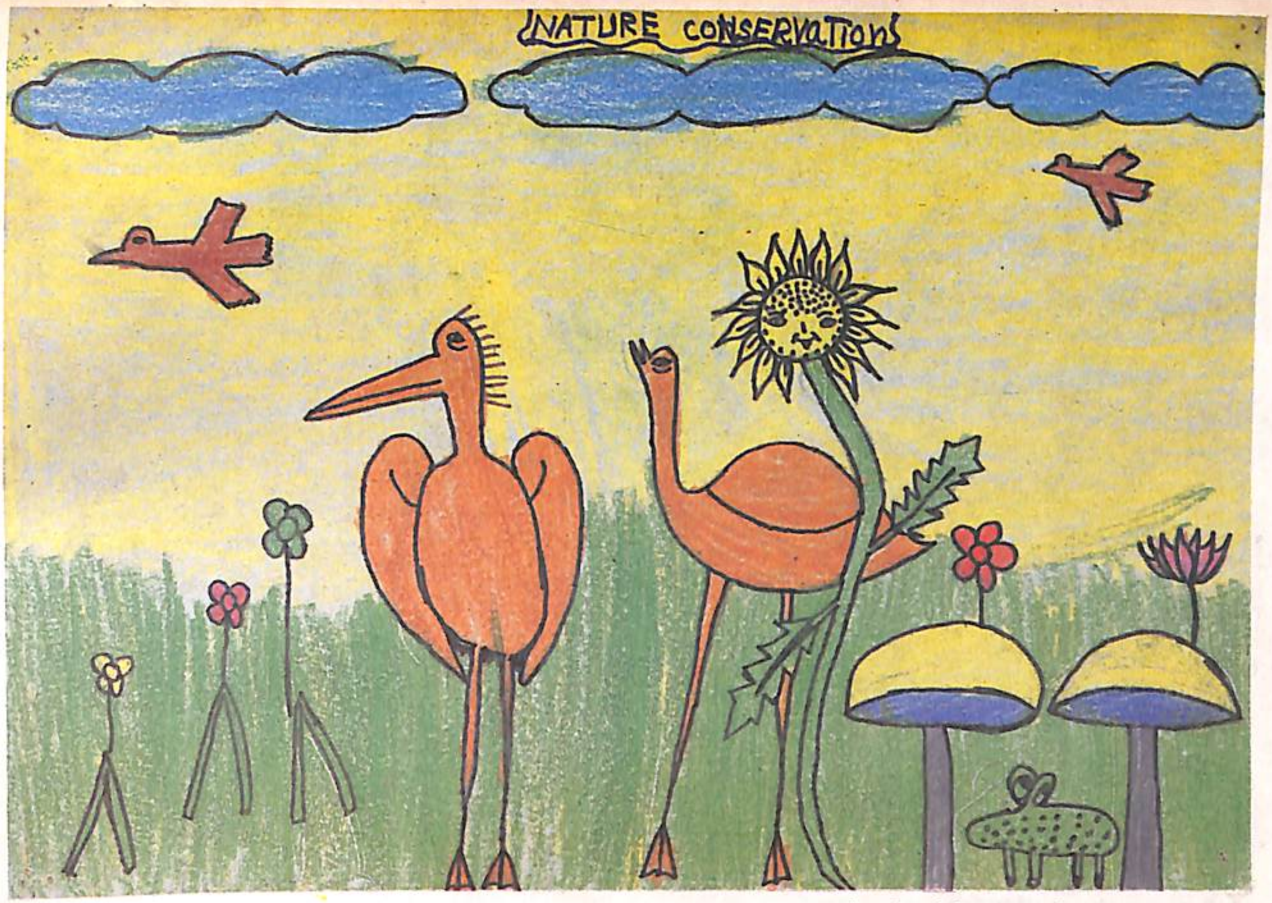

प्रतीक दिलावेरी, आठ वर्ष, जयपुर, राजस्थान

फ़रान अली, छह वर्ष, जयपुर, राजस्थान

पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार-पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/94

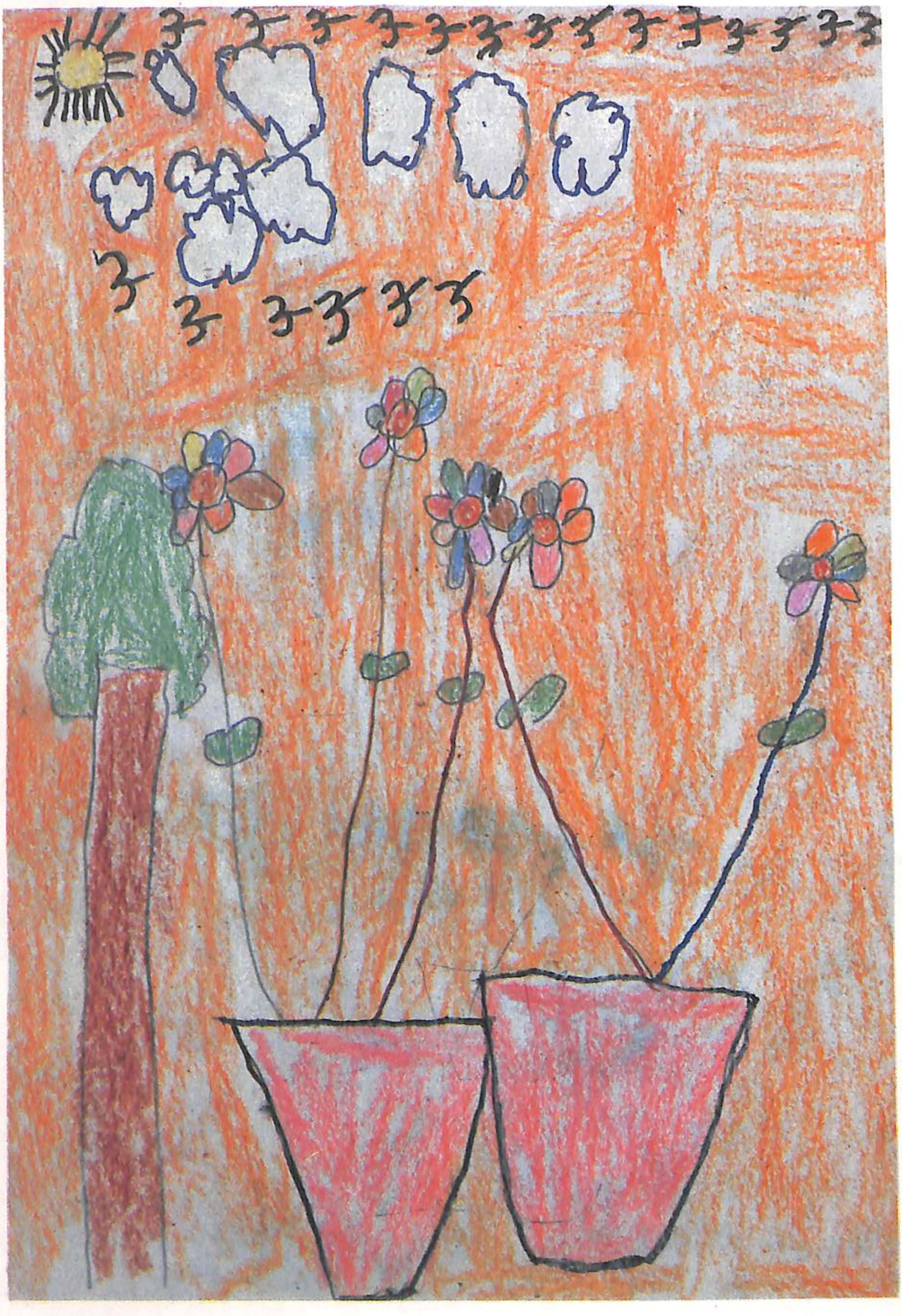

ऋषिल तम्बोली, चार वर्ष, भावनगर, गुजरात

रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कालोनी, भोपाल-462 016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना